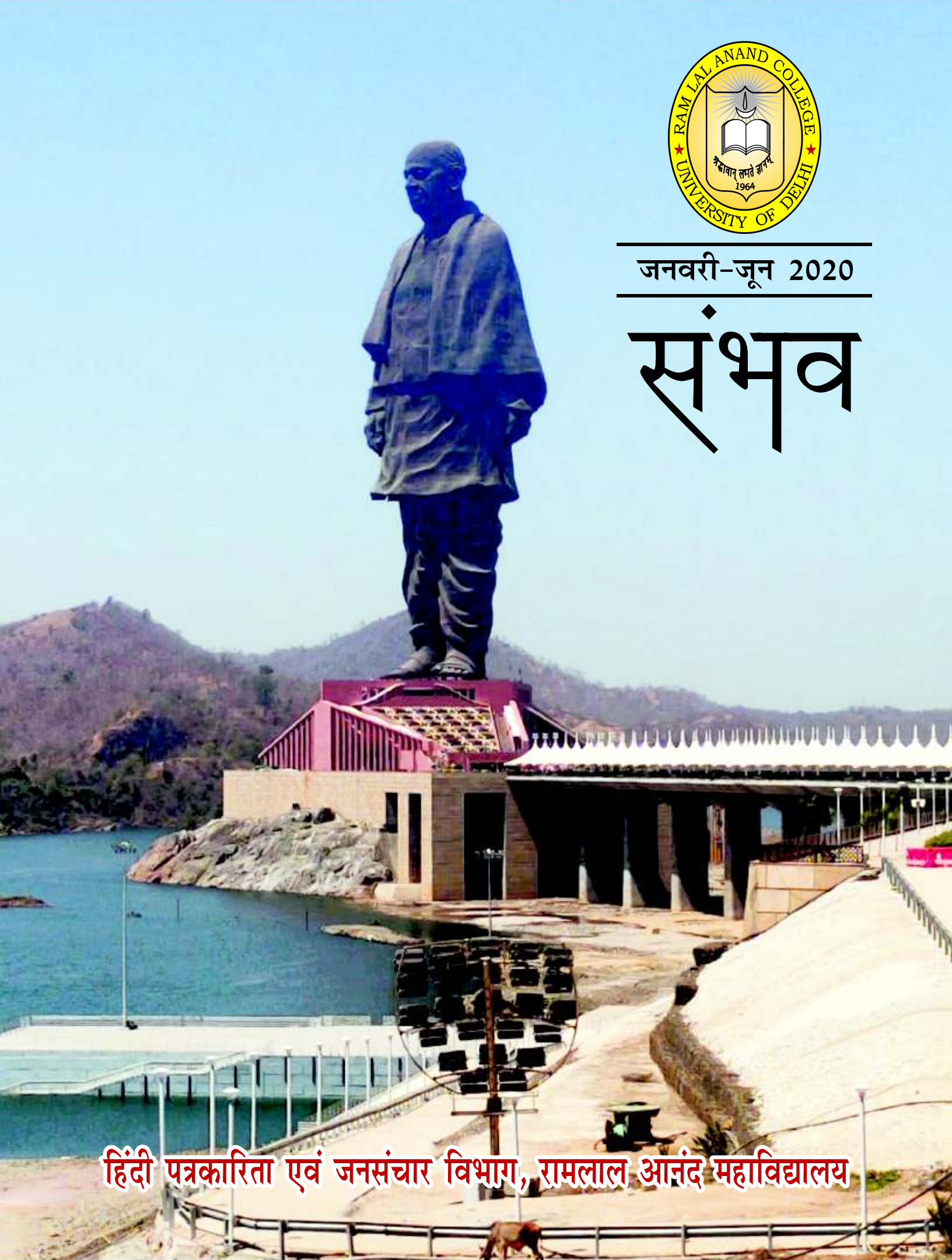

RAM LAL ANAND COLLEGE
UNIVERSITY OF DELHI
श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्
1964

जनवरी–जून 2020

संभव

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, रामलाल आनंद महाविद्यालय

जो सिखाया आपने

प्रियंका

रोशनी बनकर आए हमारी जिंदगी में
अंधेरा सारा दूर किया
सही-गलत की राह दिखाकर
जीवन में चमत्कार किया
मां-बाप ने तो सिर्फ जन्म दिया
और कॉपी-कलम पकड़ाई थी
शिक्षक ने जीने के सारे सबक सिखलाए
गिनतियों को गिन-गिनकर
बड़ा से बड़ा सवाल हल करवाया
शांति-अहिंसा और ज्ञान का
हम सबको पाठ-पढ़ाया
बिना धर्म की कलम से
जीवन के मूल आदर्शों पर चलना सिखाया
किसी को आसमान में उड़ना
तो किसी को तैरना बताया
शिक्षक ने ही हमें विद्यार्थी बनने से पहले
आदर्शवादी इंसान बनाया
नमन है आप सभी गुरुओं को
जिन्हें भगवान ने हमारे लिए बनाया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

विकल्प का मीडिया और मीडिया का विकल्प	**राकेश कुमार**	1

लेख

भारतीय विदेश नीति का रूपांतरण	**धनंजय कुमार**	2
कोविड-19 के दौरान वैश्विक राजनीति की झलक	**विकास त्रिपाठी**	4
उत्तराखंड : वो, पलायन और पहाड़	**पारसमणि**	6
आईपीएल : रोमांच के बीच विवादों का साया	**अभिषेक कुमार उपाध्याय**	8
जलवायु परिवर्तन बन गया चुनौती	**पुष्पेंद्र**	10
देश में शिक्षा की लौ जलाने वाली सावित्रीबाई फुले	**चेतना काला**	12
गजल से मोहब्बत का पैगाम देने वाली बेगम अख्तर	**भारती**	13
उम्मीद की नई किरण है सौर ऊर्जा	**आरती**	15
सरकारों के साथ व्यक्तिगत प्रयास करने होंगे	**श्रुति गोयल**	16
संचार का सशक्त माध्यम है फोटो पत्रकारिता	**आशीष**	18
फैशन इंडस्ट्री का महिलाओं पर बढ़ता दबाव	**लीशा**	19
कोरोना वायरस : खोज से लेकर अब तक का सफर	**मानसी बिष्ट**	20
अर्थव्यवस्था हुई कोरोना पॉजिटिव	**गीतू कत्याल**	21
एर्दोआन का शासन और तुर्की की राजनीति	**दीपक कुमार त्रिवेदी**	23

सैर-सपाटा

शैक्षिक यात्रा में गांधीजी को जानना	**सचिन चौहान**	25
आंख झपकी...खुली तो लगा उदयपुर पहुंच गए	**प्रज्ञा सैनी**	27
रूठ न जाना, मैं जो कहूं तो	**विद्या शर्मा**	29

कविता

जो सिखाया आपने	**प्रियंका**	फ्रंट इनर
मैं हो चुका अब खाली हूं	**जुनैद कादरी**	बैक पृष्ठ

संभव

वर्ष : 14 अंक : 1
पूर्णांक–16
जनवरी–जून 2020
जून 2020 में प्रकाशित

●●●

संरक्षक मंडल

प्राचार्य
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता

प्रभारी
डॉ. नीलम ऋषिकल्प

●●●

संपादक मंडल

संपादक
डॉ. राकेश कुमार
डॉ. अटल तिवारी

छात्र संपादक
दीपक कुमार त्रिवेदी

उप-संपादक
धनंजय कुमार, चेतना काला

फोटो
डॉ. अटल तिवारी,
दीपक कुमार त्रिवेदी और इंटरनेट

●●●

संपादकीय पता :
हिंदी, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
रामलाल आनंद महाविद्यालय,
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
बेनितो जुआरेज़ मार्ग, नई दिल्ली-110021
दूरभाष: 011-24112557
ईमेल : sambhavrla@gmail.com

●●●

स्वामी-प्रकाशक-मुद्रक
डॉ. राकेश कुमार गुप्ता
द्वारा बेनितो जुआरेज मार्ग
नई दिल्ली-110021 से प्रकाशित
और **यशस्वी प्रिंटर्स,** जी-2/122,
द्वितीय तल, सेक्टर-16, दिल्ली-110089
से मुद्रित

●●●

'संभव' में प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपादकीय

विकल्प का मीडिया और मीडिया का विकल्प

भूमंडलीकरण और संचार क्रांति ने दुनिया को एक दूसरे के साथ इस प्रकार जोड़ दिया है कि आज दुनिया की किसी भी घटना को स्थानीय नहीं माना जा सकता। भूमंडलीकरण ने पूरी दुनिया को एक बड़े बाज़ार में तब्दील कर दिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि पूंजी, वस्तुएं, सेवाएं और व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगे। आवागमन का यह दौर बेहद तेज़ और पेचीदा था। इस तेज़ी को बढ़ाया संचार क्रांति ने। ऐसा लगा कि जैसे पूरी दुनिया हमारी मुट्ठी में आ गई है।

भूमंडलीकरण के पैरोकारों ने दुनिया भर को यह सपना बेचा था कि दुनिया अब बराबर हो जाएगी। सभी देश एक दूसरे की मदद से समृद्धि और खुशहाली के रास्ते पर साथ-साथ आगे बढ़ेंगे, यही बात संचार क्रांति के विषय में भी कही जाती है। परंतु जैसे कवि मुक्तिबोध ने कहा था कि-''कविता में कहने की आदत नहीं पर कह दूं कि वर्तमान समाज चल नहीं सकता, पूंजी से जुड़ा हृदय बदल नहीं सकता।'' तो कुछ ऐसा ही घटित हुआ। वास्तव में न तो भूमंडलीकरण के आने से पूंजी और संसाधनों का एक समान वितरण हुआ और न ही संचार क्रांति ने जनमाध्यमों के लोकतांत्रिकरण को मज़बूत किया।

आज पूंजी का केंद्रीकरण हुआ है तो संचार माध्यम भी कुछ बड़े कॉरपोरेट घरानों के हाथों में केंद्रित हो चुका है। आज ज़रूरत यह है कि पूंजी और मीडिया के गठजोड़ को तोड़ा जाए और एक जनवादी मीडिया का निर्माण किया जाए। हालांकि यह भी साफ है मीडिया और पूंजी का यह गठजोड़ तोड़ना इतना आसान न होगा पर इसके दुष्परिणामों को देखकर सचेत अवश्य हुआ जा सकता।

पिछले दिनों दुनिया भर को एक ऐसे वायरस ने अपना कैदी बना लिया जिसको मात्र एक चम्मच में भरा जा सकता है। दुनिया भर के देशों को इस चुनौती का सामना मिलकर करना होगा। आज नागरिकों का यह कर्तव्य है कि समाज के हित में कोविड 19 से लड़ने के लिए तैयार रहें। सभी को संभव का यह अंक इस विषय पर जानकारी और सलाह भी देता है। मुझे लगता है कि आप सभी को यह अंक अच्छा लगेगा।

डॉ. राकेश कुमार
संयोजक, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

भारतीय विदेश नीति का रूपांतरण

● **धनंजय कुमार**

15 अगस्त 1947 की आधी रात को पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्दों के साथ भारत का नया सूर्योदय हुआ। 200 वर्षों की परितंत्रता के बाद इतिहास में वो समय आया जब ब्रिटिश इंडिया के माथे से ब्रिटिश शब्द हटा और रह गया अकेला इंडिया। जब किसी लक्ष्य का इंतजार कई पीढ़ियों तक बस इंतजार रह जाए तब लक्ष्य स्वप्न सा लगने लगता है। आधी रात को नेहरू के शब्दों के साथ ये स्वप्न साकार हुआ। भारत एक त्रासदी युग समाप्त करके स्वतंत्र युग में प्रवेश कर रहा था। ये स्वतंत्रता मुक्त बिल्कुल नहीं थी, इसकी बहुत बड़ी कीमत विभाजन के रूप में चुकानी पड़ी। भारत अब आजाद पंछी की तरह आसमान में उड़ना चाहता था। चिंता यह थी कि इस पंछी के लिए ये आसमान कितना साफ था। सच्चाई यह थी कि अभी इस पंछी के पर निकलने शुरू ही हुए थे, उड़ान भरने में अभी वक्त लगना था। इसी उड़ान की गति को नियंत्रित करने का जिम्मा विदेश नीति के कंधों पर था।

दोहरी चुनौती और भारत की नीति : 1947 से लेकर 21वीं सदी के दूसरे दशक तक भारत की यात्रा चुनौतियों और बाधाओं से सजी पड़ी थी। आजादी के स्वाद को फीका करने के लिए दो मोर्चों पर चुनौतियां सुनहरे सपनों के साथ युद्ध लड़ रही थीं। पहली चुनौती वैश्विक राजनीतिक घटनाक्रम, जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पल-पल बदल रहा था। दूसरी चुनौती भारत की अपनी थी, जिसमें गरीबी, शिक्षा, आर्थिक बदहाली आदि से पार पाना था। पूंजीवाद और साम्यवाद के सिद्धांतों ने पूरे विश्व को दो खेमों में विभाजित कर डाला था। भारत के लिए यही बड़ी चुनौती थी। जिस देश ने अभी अपने पैरों पर सही से खड़ा होना भी नहीं सीखा था, दो विचारधाराएं उसके कंधों पर लदने को तैयार खड़ी थीं। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू वैश्विक राजनीति की गहरी समझ रखते थे। नेहरू ने इस समस्या का हल इसमें ढूंढा कि भारत किसी एक तरफ नहीं झुकेगा। भारत के लिए एक तरफ झुकने का आशय था, अपने विकास के दूसरे दरवाजे बंद कर लेना। भारत को बिना शर्त के वैश्विक सहयोग की आवश्यकता थी। इसमें अमेरिका भी उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि रूस। भारत को एक ऐसी विदेश नीति की जरूरत थी जो घरेलू परिवर्तन और विकास में सहायक हो सके। यही विदेश नीति का अघोषित उद्देश्य भी है।

हालात-ए-आजादी : जिस हालत में अंग्रेज इस देश को छोड़कर गए थे, भारत उन परिस्थितियों को कभी नहीं भुला सकता। ब्रिटिश आर्थिक इतिहासकार अंगस मैडीसन के अनुसार 1820 में अकेले भारत की जीडीपी विश्व जीडीपी का 23 प्रतिशत थी। 1947 तक आते-आते भारत विश्व के गरीब, अशिक्षित और पिछड़े राष्ट्रों में शामिल हो गया। 1900 से 1947 तक भारत की विकास दर 1 प्रतिशत के भी नीचे रही, जबकि इसी दौरान आबादी 3.5 प्रतिशत की दर से बढ़ी। अंग्रेजी हुकूमत ने देश को मात्र 16 फीसदी साक्षरता के साथ छोड़ा था। कोई बड़ा घरेलू उद्योग भी नहीं था। 90 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे थी। भारत की दरिद्रता एक कठोर सत्य था।

ऐसे में स्वाभाविक था कि वैश्विक नीति में घरेलू विकास को महत्व दिया जाए। यहीं से भारत ने गुटनिरपेक्ष रहने का फैसला लिया। हमने इस चीज को हमेशा से स्पष्ट रखा कि गुटनिरपेक्ष रहने का अर्थ निष्क्रिय रहना नहीं था। भारत ने हमेशा से वैश्विक मामलों में अपनी समझ रखी है और

वैश्विक शांति के लिए किसी के समर्थन से कभी परहेज नहीं किया। यहां गुटनिरपेक्षता का अर्थ यह है कि भारत दो राष्ट्रों या गुटों के झगड़े में सम्मिलित नहीं होगा। लेकिन भारत की गुटनिरपेक्षता का दामन जितना साफ लगता है, उतना है नहीं। इस पर शुरू से सोवियत खेमे की तरफ झुकाव का आरोप लगता रहा। अमेरिका ने इसी कड़ी में भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के दो उद्यम, भिलाई और बोकारो स्टील प्लांट में सहयोग देने से मना कर दिया था।

उनका कहना था कि भारत में समाजवाद को बढ़ावा देना अमेरिका के हित में नहीं है। अमेरिका के मना करने के बाद भारत ने सोवियत संघ के सहयोग से दोनों ही उद्योगों का निर्माण किया, लेकिन इसे भी झुठलाया नहीं जा सकता कि जब 60 के दशक में देश में भीषण अकाल पड़ा तो अमेरिका ने पीएल-480 गेहूं देकर भारत की सहायता की। हरित क्रांति के समय भी अमेरिकी सहयोग कम नहीं रहा। नई दिल्ली पर राष्ट्रीय हितों के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्दों को नजरअंदाज करने के आरोप को और बल मिला, जब 1971 में चीन और पाकिस्तान के साथ दोहरे मोर्चे पर युद्ध की आशंका उत्पन्न हुई तब भारत ने इस संकट में रूस की तरफ आस लगाई और रूस के साथ मैत्री-सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर कर लिए। भारत ने तब सोवियत संघ का प्रयोग कर चीन को युद्ध से पहले ही रोक दिया। अमेरिका ने 1974 और 1998 परमाणु परीक्षणों के बाद भारत पर कई प्रतिबंध लगाए, लेकिन अंततः वह भी भारत के साथ रिश्ते अच्छे करने के लिए मजबूर हुआ।

आर्थिक एकांतवास टूटा : भारत ने आजादी के बाद 45 वर्षों तक अपने आर्थिक सिद्धांत को नहीं तोड़ा। खराब से खराब परिस्थिति में भी देश ने विदेशी निवेश को कोई अवसर नहीं दिया। लेकिन 1991 की मंदी ने भारत को ऐसा घेरा कि सब्र का बांध टूट गया। भारत सरकार को आईएमएफ से सहायता लेने के लिए देश का सोना लंदन में जमा करना पड़ा। इस परिस्थिति ने भारत को अपनी अर्थव्यवस्था का वैश्वीकरण करने पर मजबूर कर दिया। इस बदलाव के पुरोधा नरसिंह राव सरकार में वित्तमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह रहे हैं।

बदलाव का प्रभाव : 1991 के बदलावों ने भारत में विकास की रफ्तार भी बदल डाली। वैश्विक निवेश और तकनीक का प्रवाह शुरू हो गया। भारत अब नेशनल से ग्लोबल होने लगा। इसका प्रभाव 1947 से 21वीं सदी के दूसरे दशक तक के भारत के समयांतर को विकास से भरने के रूप में देखा जा रहा है। 1947 में साक्षरता 16 प्रतिशत थी, जो अब 74 प्रतिशत के पार है। औसत जीवन प्रत्याशा 32 वर्ष से बढ़कर 72 वर्ष हो गई। 1 प्रतिशत की भारतीय विकास दर 8 फीसदी तक पहुंच गई जिसने अमेरिका को भारत से रिश्ते सुधारने पर मजबूर किया। 1990 के पूरे दशक में 15 बिलियन डॉलर का निवेश भारत आया था, जो बढ़कर अकेले 2010 में 38 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया। 1980 तक भारत की वैश्विक जीडीपी में 2.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी थी जो अब 7.5 प्रतिशत है। आज भारत को दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का गौरव हासिल है। हालांकि ये बदलाव संतुष्ट करने वाले हैं, लेकिन भारत को इससे कहीं ज्यादा की आवश्यकता है। एक पक्ष मानता है कि यदि आजादी के बाद से अमेरिका की तरफ झुकाव बढ़ाकर रखा जाता तो आज भारत इससे बेहतर परिस्थितियों का सुख भोगता, जैसा सिंगापुर और वियतनाम ने किया।

आज का भारत : आज का भारत वैश्विक पद्धति को चुनौती देने की मंशा नहीं रखता लेकिन खुद को वैश्विक मंच पर सम्मानित स्थान दिए जाने की आशा जरूर करता है। भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता अब औपचारिकता मात्र है। भारत की नीति में बदलाव पूर्णतः जाहिर तो नहीं है लेकिन इसे समझना अब कठिन भी नहीं है। भारत के बड़े बाजार ने इसे मुख्यधारा में लाकर खड़ा कर दिया है। अमेरिका के भारत से रिश्ते मजबूत करना इसी बड़े बाजार का प्रतिबिंब है। यही कारण है कि चीन सैन्य शक्ति में भारत से अग्रणी होते हुए भी युद्ध की आशंका को खारिज करता है। भारत के विदेश संबंध गुटनिरपेक्षता की नीति से आगे बढ़ चुके हैं।

ब्रिक्स, आसियान और जी-20 जैसे समूहों का हिस्सा बनकर भारत ने बहुपक्षीय संबंधों को स्थापित करने का मार्ग चुना है। आज की ग्लोबल विलेज परिकल्पना के साथ यह बहुपक्षीय नीति सही लगती है। ग्लोबल विलेज परिकल्पना पूर्व-पश्चिम, पूंजीवाद-साम्यवाद, विकसित-विकासशील जैसी धुरियां अप्रासंगिक सी लगती हैं, 21वीं सदी का भारत अपनी विदेश नीति में मानवीय मूल्यों के साथ अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को भी आगे बढ़ाने में लगा हुआ है।

कोविड–19 के दौरान वैश्विक राजनीति की झलक

● **विकास त्रिपाठी**

फरवरी और मार्च 2020 के महीने में चीन से फैलते हुए कोरोना वायरस ने विश्व के लगभग हर देश में अपनी पैठ जमा ली है। इस अनजाने खतरे को देखते हुए दुनिया के लगभग सभी देशों की सरकारें लॉकडाउन की घोषणा कर चुकी हैं और इस वैश्विक महामारी ने 'ग्लोबल विलेज' के यातायात पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है। इन सभी घटनाक्रमों के बीच वैश्विक राजनीति भी करवट बदल रही है तथा संतुलित और सोची समझी वैश्विक नीतियां अचानक से कार्य करना बंद कर चुकी हैं। अचानक से संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और यूरोपीय यूनियन, जिन्हें आम तौर पर मित्र माना जाता है, एक–दूसरे पर यातायात और आर्थिक प्रतिबंध लगाने लगते हैं।

यूरोप की सरकारें डोनाल्ड ट्रंप द्वारा चीन पर लगाए गए प्रतिबंधों का विरोध करती हैं। दुनिया भर के वैज्ञानिकों के बार–बार चेतावनी देने के बावजूद ब्राजील, अमेरिका और कई अन्य देश कोरोना वायरस के घातक प्रभाव को मानने से इनकार कर देते हैं। साफ है कि साल 2020 ने यह साबित किया कि दुनिया की राजनीति में न कोई मित्र है और न ही कोई शत्रु। सभी के सभी अपने देश और नागरिकों की भलाई के लिए अपनी नीतियों में बदलाव करने को तैयार हैं। विदेश नीति के मामले में हर देश अवसर को ही आदर्श मान कर कार्य कर रहा है। इस नीति के अनुसरण में सही–गलत का महत्व न के बराबर है। इसे समझने के लिए हम साल की शुरुआत से अभी तक हो रहे घटनाक्रमों पर एक नजर डालते हैं।

ट्रंप की चीन को दोष देने की नीति : पिछले साल से ही संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दुनिया में एक 'ट्रेड वार' शुरू कर दिया था। चीन, भारत और यूरोपियन यूनियन को निशाना बनाते हुए ट्रंप प्रशासन ने हर देश के साथ होने वाले व्यापार पर टैक्स बढ़ाना शुरू कर दिया। लेकिन इस कड़ी में सबसे अधिक टैक्स चीन के साथ होने वाले व्यापार पर बढ़ाया गया।

राष्ट्रपति ट्रंप का मानना है कि चीन अमेरिका के साथ होने वाले व्यापार में हमेशा लाभ उठाता है। इसको देखते हुए ट्रंप ने महामारी से पहले ही चीन से आने वाले सामानों पर 400 मिलियन डॉलर से अधिक का टैक्स लगाया था, जिसके कारण विश्व में व्यापार के संबंध में एक अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। चीन को दुनिया का सबसे बड़ा निर्यातक माना जाता है। चीन विश्व के लगभग सभी देशों के साथ व्यापार करता है। यह स्थान एक वक्त पर अमेरिका का था। साफ है कि राष्ट्रपति ट्रंप अपनी 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' की योजना पर कार्य करने में लगे हुए थे। कोविड–19 महामारी ने राष्ट्रपति ट्रंप को चीन के खिलाफ एक और हथियार दे दिया।

हर तरफ एक विवाद खड़ा करता चीन : कोरोना महामारी की शुरुआत चीन से हुई। इस वायरस ने लाखों लोगों को मौत की चपेट में ले लिया है। चीन की सरकार पर आरोप है कि सरकार ने वायरस के बारे में विश्व को शुरुआती दिनों में सचेत नहीं किया। जिनपिंग सरकार वायरस को छुपाने का हर संभव प्रयास कर रही थी। इन आरोपों से ध्यान भटकाने के लिए चीनी सरकार ने नए तरीके अपनाए। चीन ने देश के हर हिस्से में कोई न कोई विवाद खड़ा करना शुरू किया। हांगकांग में पिछले साल से ही चीन विरोधी प्रदर्शन चल रहे

थे। इसके विरोध में चीनी सरकार नया राष्ट्रीय सुरक्षा कानून लाई। हांगकांग जो कि अब तक एक स्वायत्तशासी देश था, इस नए कानून से उसकी स्वायत्तता पर कई प्रतिबंध लगा दिए गए। दक्षिण चीन सागर में स्थित ताइवान के साथ चीन का विवाद कई दशक पुराना है।

कोविड-19 महामारी ने विश्व के एक तिहाई लोगों को महीनों के लिए अपने-अपने घरों में बंद कर दिया। सामाजिक दूरी और मास्क पहनना 'न्यू नार्मल' बन गया। इन ऐतिहासिक परिवर्तनों के बीच दुनिया भर के देश अपने घर और बाहर दोनों की राजनीति को नियंत्रित करने में लगे हुए थे। एक वायरस जो चीन के एक बाजार से फैलना शुरू हुआ, आज दुनिया के हर कोने में फैला हुआ है। इस वायरस ने दुनिया के वैश्वीकरण की परिकल्पना को सच साबित कर दिया है। एक तरफ कुछ देशों ने अपनी गलत नीतियों को छुपाने के लिए दूसरे देश को दोषी करार देने का तरीका निकाला तो दूसरी ओर कुछ देश एक मुद्दे से ध्यान भटकाने के लिए अन्य परेशानियां सामने लाने लगे। हर देश का प्रशासन आरोप-प्रत्यारोप करने की नीति का पालन करने लगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ और विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसे संस्थानों को भी महामारी के बारे में सचेत न करने के लिए दोषी करार दिया गया। हालांकि इन सभी के बीच कुछ अच्छे संकेत भी सामने आते दिखे। एक ओर दुनिया के बड़े देश कोरोना वायरस की चपेट में आकर लड़खड़ाते दिख रहे थे तो दूसरी ओर कई छोटे देशों ने इस वायरस से लड़ने में सफलता हासिल की। विश्व के आदर्श माने जाने वाले देशों ने भेड़ चाल का पालन करते हुए एक दूसरे का अनुसरण किया। सभी ने पूर्ण बंदी का तरीका अपनाया। इसके इतर कुछ अन्य देशों ने अपने देश में अलग नीतियों का अनुसरण किया और बहुत हद तक सफल भी रहे। चीन ने ताइवान में बढ़ती चीन विरोधी नीतियों को देखते हुए ताइवान द्वीप के चारों तरफ चीनी युद्ध पोतों को तैनात कर दिया। चीन और ताइवान के बीच तनाव इस वक्त चरम पर है।

बहुपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देता भारत : महामारी के दौरान पड़ोसी चीन की तरफ से आई चुनौतियों का प्रभाव भारतीय विदेश नीति पर पड़ा। भारत की सरकार जो पिछले कुछ सालों से गुटनिरपेक्षता की जगह बहुपक्षीय कूटनीतिक संबंधों को बढ़ावा दे रही थी अब खुले तौर पर अपने सहयोगी देशों के साथ संबंध बनाने में जुट गई है। ब्रिक्स और आसियान जैसे संगठनों में भारत चीन को अलग-थलग करने में पहले से ही लगा हुआ था, अब भारत शंघाई सहयोग संगठन में भी चीन के खिलाफ मोर्चा खड़ा कर रहा है। हाल में तनाव के बीच शंघाई सहयोग संगठन के सैन्य अभ्यास में चीन की सेना के साथ सैन्य अभ्यास करने से भारत ने मना कर दिया। कोविड-19 महामारी के दौरान बदलती वैश्विक परिस्थितियां इशारा कर रही हैं कि अब विश्व दो धुरियों के बजाय कई शक्ति केंद्रों में परिवर्तित हो रहा है।

पश्चिम और खासकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका वैश्विक परिदृश्य में अपने प्रभाव को खोता जा रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियां अमेरिका को वैश्विक मुद्दों से बाहर खींचने में ही लगी दिखाई दे रही हैं। इस नीति का फायदा उठाते हुए चीन, रूस और तुर्की जैसे देशों ने अमेरिका का स्थान लेने की कोशिश की है। यूरोपीय देश अपने आंतरिक झगड़ों के कारण विकासशील देशों पर अब अपना प्रभाव खो रहे हैं। इस बीच भारत जैसा विकासशील और बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश अपने प्रभाव को स्थापित करने में लगा हुआ है। कोविड-19 महामारी के पश्चात आने वाली परिस्थितियां दुनिया की राजनीति में बड़ा बदलाव लाएंगी। प्रश्न यह है कि क्या यह बदलाव मानवता की भलाई के लिए होगा या नहीं?

उत्तराखंड : वो, पलायन और पहाड़

● **पारसमणि**

कोरोना महामारी ने सभी की कमर तोड़ कर रख दी। यूं तो हर कोई परेशान हुआ लेकिन 'वो' कुछ ज्यादा परेशान हुए। उनकी समस्याएं बाकियों से अलग थीं। वो सड़कों पर मीलों लंबी पैदल यात्रा करते और अपने घर को लौटने के लिए बेसब्र देश की हर सड़क पर लाचार दिखाई दिए। कौन थे वो? पलायन करने वाले मजदूर जो रोजगार की तलाश में महानगरों की तरफ आ गए थे। उनके गांव छोड़ देने से सब सूना हो गया। पलायन क्या है और आखिर क्यों यह संस्कृतियों को उजाड़ रहा है? भारत की अपनी एक पहचान है, विभिन्नता में एकता। ठीक उसी प्रकार उत्तराखण्ड राज्य में भी अलग-अलग बोली व संस्कृति के लोग निवास करते हैं।

कुमाऊं तथा गढ़वाल मंडल में विभक्त इस राज्य की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन शब्दों में कर पाना संभव नहीं हो सकेगा। आंखों को सुकून देने वाला मनमोहक दृश्य, हिमालय की वादियों और दून की घाटियों में उपस्थित इस राज्य की तुलना दूसरे राज्य से नहीं की जा सकती। राज्य का गठन हुए 20 वर्ष बीत चुके हैं पर जब कभी विकास के तराजू में बीते वक्त को तौल कर देखा जाता है तो एक पलड़ा बिल्कुल खाली नजर आता है और वो है विकास का। उत्तराखण्ड में सड़कों का जाल तो बहुत बिछा है और बिजली भी लगभग हर जिले में पहुंच रही है, पर चिंता का विषय जो सामने आता है वो यह है कि आज यह राज्य पलायन की समस्या से जूझ रहा है। सड़कों का बन जाना विकास के लिए पर्याप्त नहीं, क्योंकि असल मायनों में विकास तो ग्रामीणों को मिलने वाली मूलभूत सुविधाओं की पूर्ति होता है। जब राज्य का गठन नहीं हुआ था तब यह उत्तर प्रदेश का हिस्सा था।

युवाओं तथा आंदोलनकारियों ने विकास की तर्ज पर अपनी पृथक संस्कृति के लिए एक अलग राज्य की मांग की, जो वर्ष 2000 में पूरी हुई और उत्तराखण्ड का निर्माण हो गया। इन 20 सालों में सरकारें आई-गईं। जनप्रतिनिधि बदले, पर जनता की मांगें वहीं रहीं। आज राज्य में पलायन एक चुनौती के रूप में सामने खड़ा है। यह बात तो तय है कि जल्द ही इस पर काबू न पाया गया तो यह राज्य अपना अस्तित्व खो देगा। पलायन करने वालों पर तो अक्सर इल्जाम लगाया जाता है कि फलां व्यक्ति ने अपना गांव छोड़ दिया और बस गया शहरों में। हालांकि असल बात तो यह है कि पलायित होने वाले व्यक्ति की मजबूरी होती है कि वह अपने गांव को, जहां उसने जन्म लिया उसे छोड़कर किसी पराए शहर में जा बसे। ग्रामीण बताते हैं कि वहां किसी तरह की मूलभूत सुविधाएं मौजूद नहीं हैं तो ऐसे में जीवन यापन कैसे किया जाए? बात फिर एक रोजगार की हो, स्वास्थ्य सुविधाओं की हो, अच्छी शिक्षा की हो या फिर कृषि व्यवस्था समेत अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की, सभी में उनके हाथ सिर्फ निराशा ही लगती है। उत्तराखण्ड की लगभग 90 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है अर्थात उनकी जीविका व भरण-पोषण का एकमात्र जरिया उनके खेत व उपज हैं, पर दुख की बात यह है कि ये किसान खेती छोड़ने को मजबूर हैं। इन्होंने अपने

खेतों को बंजर होने के लिए छोड़ दिया है। किसानों की इस मजबूरी का कारण यह है कि सरकार कृषि क्षेत्र के लिए बेहतर योजनाएं नहीं बना रही है।

बात करें पलायन की तो आंकड़े बहुत निराश कर देने वाले हैं। सरकार ने जमीनी स्तर पर पड़ताल व सर्वेक्षण के लिए ग्रामीण विकास एवं पलायन आयोग का गठन किया, जिसने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी। आयोग की रिपोर्ट के अनुसार 646 पंचायतों के 16,207 लोग स्थायी रूप से अपना गांव छोड़कर जा चुके हैं। तमाम गांव ऐसे हैं जो आबादी विहीन हो गए हैं। इन खाली हो चुके गांवों को भूतिया गांवों की श्रेणी में रखा गया है, जहां केवल झाड़ियों में ढके हुए ताला लगे मकान खड़े हैं। अनेक गांव ऐसे हैं, जिनमें उजियारा करने के लिए केवल बुजुर्ग ही बचे हैं। पहले रोजगार की तलाश में पलायन हो रहा था पर अब पाश्चात्य जीवन शैली ने लोगों को लुभाना शुरू कर दिया है और वे अपनी संस्कृति को छोड़ कर शहरों के प्रदूषण भरे वातावरण में रहना अधिक पसंद करते हैं।

अल्मोड़ा जिले में पलायन करने वालों की कुल संख्या में 50 प्रतिशत युवा वर्ग है। युवाओं को भविष्य की धरोहर की संज्ञा दी जाती है और यह उम्मीद की जाती है कि वे अपने गांव में रहकर विकास के मार्ग तलाश करेंगे किंतु यहां हालात ठीक उलट हैं। युवा ही गांव में नहीं रहना चाहता। पलायन की मूल समस्या रोजगार की कमी व रोजगार के कम अवसरों का होना ही है। पढ़-लिखने के बाद आज के दौर का हर व्यक्ति, खेतों में पसीना नहीं बहाना चाहता। उसे एक नौकरी की तलाश होती है, जिसमें उसे तय रकम हर माह मिल जाए। सरकार की योजनाओं की कमी यही है कि वे वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली जैसी योजनाओं को लागू करके युवाओं को स्व-रोजगार के लिए प्रोत्साहित तो कर रही है किंतु इसमें रोजगार का क्षेत्र बेहद सीमित है, जैसे-बाइक के लिए लोन लेकर पर्यटकों को घुमाना। जाहिर है कोई भी युवा ड्राइवर बनने के अतिरिक्त भी कुछ अलग इच्छाएं रखता है।

सरकार को सबसे पहले राज्य में अच्छी शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी, जिसमें कौशल विकास पाठ्यक्रम भी शामिल हो ताकि कोई भी छात्र पढ़ाई के लिए शहर का रुख न करे। इसके उपरांत योग्यता के अनुरूप उन्हें मानदेय व नौकरी प्राप्त करवाई जा सके। अब बात आती है उस वर्ग की जो पढ़ा लिखा नहीं है व अशिक्षित है। जाहिर है वह खेती ही करेगा तो सरकार को कृषि व्यवस्था सुदृढ़ करनी होगी। वर्तमान में पहाड़ी क्षेत्रों पर खेती के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है जंगली जानवरों व आवारा पशुओं का आतंक। कई बार इनकी वजह से फसलें पूरी तरह बर्बाद हो जाती हैं। वर्षा पर निर्भर क्षेत्रों के लिए सिंचाई की उचित व्यवस्था सरकार द्वारा की जानी बेहद जरूरी है। मशरूम गर्ल दिव्या रावत जैसी युवाओं को प्रोत्साहित कर युवाओं को प्रेरित करके भी सरकार उन्हें पलायन करने से रोक सकती है।

पलायन आयोग के अनुसार पलायित लोगों की 70 प्रतिशत आबादी ने राज्य के भीतर ही पलायन किया है और वे मैदानी क्षेत्रों में जा बसे हैं। जाहिर है कि इससे सरकार को यह समझना चाहिए कि मैदानी क्षेत्रों की तरफ उनका रुख करने का मुख्य कारण पहाड़ी व मैदानी क्षेत्रों में असंतुलित विकास है। अर्थात सरकार को सर्वप्रथम इस 70 फीसदी आबादी को पहाड़ों में ही रोक के रखने के लिए मैदानी क्षेत्रों जैसी सुविधाएं मुहैया करानी होंगी। अल्मोड़ा जिले की साक्षरता दर राज्य में सबसे अच्छी है। इसके बावजूद पलायन का दर्द यह जिला गंभीर रूप से झेल रहा है। निष्कर्ष स्वरूप यही कहा जा सकता है कि उत्तराखण्ड की वर्तमान स्थिति पलायन के संदर्भ में बहुत खराब है। इसके अतिरिक्त यदि इन पर्वतीय क्षेत्रों को जल्द ही विकास की सौगात नहीं दी गई तो उत्तराखण्ड का पतन होना तय है।

आईपीएल : रोमांच के बीच विवादों का साया

● **अभिषेक कुमार उपाध्याय**

आईपीएल का पहला सीजन 2008 में खेला गया। कुछ ही सालों में आईपीएल ने एक बड़े व्यापार का रूप ले लिया। युवा प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के साथ-साथ आईपीएल ने बीसीसीआई को मुनाफे का व्यावसायिक मॉडल भी दिया है। 2018 की बैलेंस शीट के मुताबिक बीसीसीआई को सीधे तौर पर 2000 करोड़ रुपए का नफा हुआ था जो 2008 में होने वाली कमाई 350 करोड़ से 17.5 प्रतिशत अधिक है, लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। एक तरफ जहां आईपीएल टी-20 क्रिकेट का मरकज बनकर उभरा वहीं दूसरी तरफ यह विवादों से भी घिरा रहा। 'जेंटलमेन्स गेम' कहे जाने के बावजूद क्रिकेट जगत में समय-समय पर विवाद होते रहे हैं, चाहे वो हैंसी क्रोनिए को सन 2000 में आजीवन बैन कर देना हो, तीन पाकिस्तानी खिलाड़ियों का स्पॉट फिक्सिंग मामले में दोषी पाए जाना हो या हाल ही में बॉल टेम्परिंग का दोषी पाए जाने के बाद तीन आस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों का अंतराष्ट्रीय मैचों से एक साल के लिए बैन करना हो। इसी तरह आईपीएल भी विवादों से अछूता नहीं रह सका। आईपीएल अपने 12 सीजन पूरे कर चुका है और इस दौरान हमें आईपीएल में कई विवाद भी देखने को मिले हैं।

स्लैपगेट 2008 : आईपीएल का पहला सीजन पहले विवाद को साथ लेकर आया। मुंबई इंडियंस और किंग्स इलेवन पंजाब 25 अप्रैल 2008 को मोहाली के मैदान में मुकाबले के लिए उतरे। किंग्स इलेवन पंजाब ने यह मैच काफी आसानी से जीत लिया। मैच के बाद श्रीसंत और हरभजन के बीच कुछ नोक-झोंक हो गई, जिसके बाद हरभजन ने आईपीएल की पहली कन्ट्रोवर्सी खड़ी कर दी। हरभजन ने श्रीसंत को थप्पड़ जड़ दिया, जिसके बाद उन पर 11 मैच तक का बैन लगाया गया। हालांकि आज तक इस बात का खुलासा नहीं हो पाया है कि हरभजन ने श्रीसंत को थप्पड़ क्यों मारा था।

पाकिस्तानी खिलाड़ियों पर बैन 2009 : 26/11 हमले के बाद पूरा देश आक्रोश में था। सारे सबूत यही इशारा कर रहे थे कि यह हमला पाकिस्तानी मूल के आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने किया है। नतीजतन भारत सरकार ने पाकिस्तान से सारे संबंध तोड़ने का फैसला कर लिया, जिसके बाद आईपीएल से भी पाकिस्तानी खिलाड़ी बैन हो गए। पाकिस्तानी खिलाड़ियों के कान्ट्रैक्ट को रद्द कर दिया गया। पहले सीजन के बाद आज तक कोई पाकिस्तानी खिलाड़ी आईपीएल का हिस्सा नहीं बन पाया। हालांकि बीच-बीच में कई बार पाकिस्तानी खिलाड़ियों को आईपीएल में खिलाने की मांग उठती रहती है, पर उन्हें बीसीसीआई की तरफ से खारिज कर दिया जाता है।

ललित मोदी 2010 : ललित मोदी वह नाम है जिसने आईपीएल की संकल्पना तैयार की व उसकी नींव रखी, लेकिन कुछ समय बाद ललित विवादों में घिर गए। आईपीएल का तीसरा सीजन खत्म होने के साथ ही ललित मोदी को बीसीसीआई से बर्खास्त कर दिया गया। उन पर दुराचार, अनुशासनहीनता और वित्तीय अनियमितताओं के आरोप लगे। आरोपों की जांच के लिए एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने 2013 में एक रिपोर्ट जारी की, जिसमें इन आरोपों को सही पाया गया। ललित मोदी को बीसीसीआई से आजीवन बैन कर दिया गया है और वह इस समय लंदन में हैं।

स्पॉट फिक्सिंग 2013 : आईपीएल के इतिहास में 2013 एक काले धब्बे की तरह है। इस साल श्रीसंत, अजीत चंडीला और अंकित चौहान को स्पॉट फिक्सिंग के मामले में गिरफ्तार किया गया था। तीनों ही खिलाड़ी राजस्थान रॉयल्स की तरफ से खेला करते थे। यह खबर बाहर आते ही राजस्थान ने इन तीनों खिलाड़ियों के कान्ट्रैक्ट भी रद्द कर दिए। खिलाड़ियों को पांच साल के लिए बैन कर दिया गया। 2007 टी-20 वर्ल्ड कप में भारत की जीत के बाद से ही श्रीसंत लोकप्रिय हो गये थे।

मैनकाडिंग 2019 : किंग्स इलेवन पंजाब और राजस्थान रॉयल्स के बीच 25 मार्च 2019 को मैच खेला जा रहा था। मैच काफी रोमांचक था। दोनों टीमें जीतने के लिए सब कुछ करने को तैयार थीं। तभी किंग्स इलेवन पंजाब की तरफ से बॉलिंग करते हुए रविचंद्रन अश्विन ने राजस्थान रॉयल्स के जॉस बटलर को 'मैनकड' कर दिया। इस घटना ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। इस रन आउट के बाद पूरे क्रिकेट जगत में मैनकड के नियम को लेकर बहस छिड़ गई। कई खिलाड़ियों का मानना था कि मैनकड क्रिकेट की भावना के विरुद्ध किया जाता है, जबकि बाकी का कहना था कि यह नियमों के अनुरूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं। क्रिकेट और विवाद का चोली दामन का साथ रहा है। क्रिकेट के सबसे आधुनिक रूप का प्रतिनिधि होने के नाते आईपीएल में भी विवाद होना लाजिमी था। हालांकि इन सब घटनाओं के बावजूद इस खेल की मर्यादा व रोमांच बिलकुल कम नहीं हुआ है।

जलवायु परिवर्तन बन गया चुनौती

विश्व भर में आज जलवायु परिवर्तन का विषय बहुत ही अहम मुद्दा बना हुआ है। इस बात से आज कोई भी देश इंकार नहीं कर सकता कि जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है। इससे निपटना वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गई है। पिछले आंकड़े देखने पर पता चलता है कि 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है और इसी के साथ-साथ हम देखते हैं कि पिछली सदी से अब तक समुद्र के जल स्तर में काफी बढ़ोतरी हुई है। आकड़ों से पता चलता है कि वर्तमान समय गंभीरता से जलवायु परिवर्तन के बारे में सोचने का है।

प्रकृति मानव सभ्यता का पालन पोषण करती है। पृथ्वी खुद की स्वामी स्वयं है और वह अपना संतुलन खुद ही कर लेती है, लेकिन बढ़ते वैश्विक तापमान के कारण वैश्विक पर्यावरण और मौसम में बड़ा बदलाव देखने को मिलता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव सम्पूर्ण जैव-जीवन पर पड़ रहा है। ग्लोबल वार्मिंग उस स्थिति की घोतक है, जब पृथ्वी का तापमान निरंतर बढ़ता जाता है तथा औसत ताप स्तर की सीमा से भी परे चला जाता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण सर्वाधिक दुष्प्रभाव विध्रुविय देशों एवं विकासशील देशों पर पड़ रहा है। मौसम में परिवर्तन के साथ कृषि का उत्पादन घटना, स्वास्थ्य स्तर का गिरना, जलस्तर का बढ़ना, जैव विविधता के अस्तित्व पर खतरा आदि नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं।

ग्लोबल वार्मिंग जैसी वैश्विक समस्या से निजात पाने के लिए सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय को एक साथ आना होगा। पिछले

कुछ समय में वैश्विक समुदाय के साझे प्रयासों से इसमें सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। 1992 का रियो अर्थ समिट इस दिशा में एक मील का पत्थर साबित हुआ है। इस सम्मेलन में ग्लोबल वार्मिंग रोकने सम्बन्धी विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई तथा 'सीओपी' के आयोजन पर सहमति जताई गई। 'सीओपी' का उद्देश्य वैश्विक तापमान को निश्चित अवधि में कम करना है और इसके साथ ही 2015 में यूएनओ के द्वारा घोषित सतत् विकास लक्ष्यों के अंतर्गत भी ग्लोबल वार्मिंग जैसी वैश्विक समस्या के उन्मूलन के लिए लक्ष्य निश्चित किए गए हैं। यदि जलवायु परिवर्तन व ग्लोबल वार्मिंग जैसी ज्वलंत समस्याओं की तह में जाया जाये तो इसके कई कारण देखने को मिलते हैं। ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण ग्रीन हाउस गैस होती है, जिनमें से कुछ प्राकृतिक क्रियाओं द्वारा तो कुछ मानव निर्मित भी हैं। वातावरण में एयरोसोल जैसे प्रदूषकों की मौजूदगी भी धरती की सतह का तापमान बढ़ाती है।

अत: समय की मांग यह है कि ग्लोबल वार्मिंग रूपी वैश्विक समस्या का समाधान साझे वैश्विक प्रयासों के द्वारा किया जाना चाहिए, यह समस्या देश की भौगोलिक सीमाओं में न बंधकर सम्पूर्ण जैव-जगत की समस्या है। यह केवल तभी किया जा सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण का संरक्षण करना अपना कर्त्तव्य समझे और प्रकृति के देवत्व को स्वीकार करे। उसका सम्मान करे तथा उसका संरक्षण करे।

देश में शिक्षा की लौ जलाने वाली सावित्रीबाई फुले

• चेतना काला

इतिहास ने अपने गर्भ में अनेकों रत्नों को सहेजा है, जिन्होंने समय-समय पर समाज को एक बेहतर कल देने का प्रयास किया है। ऐसे समाज सुधारकों की सूची में एक प्रमुख नाम है सावित्री बाई फुले, जिन्होंने अपने जीवन काल में लोगों के बीच लिंग, जाति, वर्ण आदि के आधार पर होने वाले भेदभाव के खिलाफ संघर्ष और सुधार कार्य किए। सावित्री बाई के लिए समानता, मानवता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों का बहुत महत्व था। जिस समय औरतों को मात्र एक वस्तु माना जाता था, सावित्री बाई ने शिक्षा की चिंगारी फूंककर सभी बंधनों को चुनौती दी।

सावित्री बाई का जन्म 3 जनवरी 1831 को पुणे से 50 किलोमीटर दूर नायगांव में हुआ था। उनके पिता का नाम खंदोजी नेवसे और माता का नाम लक्ष्मी था। सावित्री का परिवार माली संप्रदाय का हिस्सा था। 1840 में 10 वर्ष की सावित्री का विवाह 12 वर्षीय ज्योतिबा फुले से हुआ। ज्योतिबा फुले को महाराष्ट्र और भारत के सामाजिक सुधार आंदोलनों में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। वे महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षा प्रदान करने में कार्यरत थे। विवाह उपरांत ज्योतिबा ने सावित्री बाई को भी पढ़ाया। यह माना जाता है कि प्राथमिक शिक्षा ज्योतिबा से प्राप्त होने के बाद उन्हें सखाराम यशवंत प्रांजपे और केशव शिवराम भवलकर ने शिक्षित किया। इसके अतिरिक्त सावित्री बाई ने अहमदनगर और पुणे से शिक्षा ग्रहण की। पुणे से अध्यापिका बनने का शिक्षण भी ग्रहण किया था। ज्योतिबा फुले ने समाज के सामने एक सशक्त महिला के रूप में हमेशा सावित्री बाई को प्रोत्साहित किया। फुले दंपत्ति ने 1848 में साथ मिलकर एक विद्यालय और पुस्तकालय शुरू किया। यह विद्यालय उन्होंने मात्र 9 विद्यार्थियों के साथ प्रारंभ किया था। एक ही वर्ष में उन्होंने 5 नए विद्यालय और खोल दिए। उनके इस कार्य से खुश होकर तत्कालीन सरकार ने उन्हें सम्मानित भी किया था। इस प्रकार सावित्री बाई देश की प्रथम प्राध्यापिका भी बनीं। साथ ही सावित्री बाई ने पहले किसान विद्यालय की स्थापना भी की थी। 1863 में उन्होंने गर्भवती और शोषित विधवाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपने घर में ही भ्रूण हत्या की रोकथाम के लिए एक संस्थान शुरू किया। उन्होंने बिना दहेज या बिना खर्च के विवाह की परंपरा शुरू करते हुए सत्य शोधक समाज की स्थापना की। उन्होंने विधवाओं के लिए केंद्र तैयार करवाए। पुनर्विवाह को लेकर लोगों में बसी गलत धारणाओं का विरोध किया और अछूतों के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया। बताया जाता है कि जब सावित्री बाई शिक्षिका के रूप में विद्यालय जाती थीं तो उनको रोकने के प्रयास में लोग उनके ऊपर मैला फेंकते थे। सावित्री बाई ने इस यात्रा के दौरान शारीरिक और मानसिक पीड़ा को सहते हुए भी कभी हिम्मत नहीं हारी। इन संघर्षों के अतिरिक्त सावित्री बाई को मराठी की आदि कवियत्री के रूप में भी जाना जाता था। उन्होंने अपने जीवनकाल में दो पुस्तकें लिखी-काव्य फुले और बावनकशी सुबोधरत्नाकर। सावित्री बाई ने समाज में जिस क्रान्ति को लाने का प्रयास किया उसका मार्ग कदापि सरल नहीं था। इस यात्रा के दौरान उन्हें लोगों की पथरीली सोच की चोट को सहना पड़ा। लेकिन उनके धैर्य ने हर चोट का बड़ी सरलता से जवाब दिया और समाज के समक्ष वह एक आदर्श बनकर उभरीं।

गज़ल से मोहब्बत का पैगाम देने वाली बेगम अख़्तर

● **भारती**

'ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया...' बेगम अख्तर का नाम सुनते ही जेहन में सबसे पहले यह गजल दौड़ने लगती है। उन्हें गजल की मल्लिका कहा जाता है। उनके नाम से गजल, ठुमरी और दादरा का खयाल आता है, जिसे सुनकर लोग झूम उठते हैं। गजल ही बेगम अख्तर की पहचान है। आज भी उनकी गाई गजलों को सुनने के लिए लोग बेताब हो उठते हैं। नई पीढ़ी में यदि आज भी कोई उनकी गाई गजलों को एक बार सुन ले तो वह हमेशा के लिए उन्हें सुनने का आदी हो जाता है। बेगम अख्तर और उनकी गजल एक सिक्के के दो पहलू की तरह हैं। एक के बिना दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती। बेगम अख्तर पहली महिला थीं, जिन्होंने गजल की महफिलों से उठकर पब्लिक कॉनसर्ट में जगह बनाई।

बेगम अख्तर ने उस दौर में महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया था जब आम तौर पर महिलाएं इस क्षेत्र में कम आती थीं। उन्होंने लोगों को बताया कि गजल भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा का एक अहम हिस्सा है। एक समय था जब महिलाएं साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र में बेहद कम नजर आती थीं। उस दौर में बेगम अख्तर उन चुनिंदा गायिकाओं में शुमार थीं, जिन्होंने इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ाए। उस समय गायिकाओं में सिद्धेश्वरी देवी, गौहर जान

कर्नाटकी, गंगूबाई हंगल, अंजनी बाई मालपकर, मोगूबाई कुर्डिकर रसूलन बाई आदि थीं, जिन्होंने सार्वजनिक तौर पर कई कॉन्सर्ट दिए। इन्हीं महिलाओं ने समाज को यह बताया कि महिलाएं किसी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं।

7 अक्टूबर 1914 को अवध की राजधानी फैजाबाद में बेगम अख्तर का जन्म हुआ था। उनका जन्म एक तवायफ मुश्तरीबाई के घर हुआ था। उन्हें सात साल की उम्र से ही उनकी मां ने मौसिकी की तालीम देनी शुरू की थी। उन्होंने उस्ताद इमदाद खां, उस्ताद अब्दुल वहीद खां (किराना), उस्ताद रमजान खां, उस्ताद बरकत अली खां-पटियाला, उस्ताद गुलाम मोहम्मद खां-गया और अता मोहम्मद खां-पटियाला से संगीत और गायिकी का ककहरा सीखा। उन्होंने कोलकाता में बिहार रिलीफ फंड के एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी पहली पब्लिक परफॉर्मेंस दी थी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर सरोजनी नायडू थीं, जिन्होंने 13 साल की बेगम अख्तर के गजल, दादरा और ठुमरी से प्रभावित होकर उन्हें एक साड़ी उपहार स्वरूप दी थी। 1938 में बेगम अख्तर लखनऊ आई थीं और तभी से उनके दिल में लखनऊ बस गया था। उन्होंने लंबे समय तक लखनऊ दूरदर्शन के लिए काम किया था। 1930 में वे एक पारसी थिएटर से जुड़ी थीं। उन्होंने कोरेन्थियन थिएटर कंपनी के कुछ नाटकों जैसे-'नई दुल्हन', 'रंगमहल', 'लैला मजून', 'हमारी भूल' में अभिनय के साथ-साथ गायन भी किया। अपने सिने करियर की शुरुआत उन्होंने 'एक दिन का बादशाह' फिल्म से की। इसके बाद उन्होंने 'नल दमयंती', 'मुमताज बेगम', 'अमीना', 'जवानी का नशा', 'रूपकुमारी', 'नसीब का चक्कर', 'अनार बाला', 'रोटी', 'दाना पानी' 'एहसान' जैसी फिल्मों में अदाकारी की। उनकी आखिरी फिल्म साल 1958 में आई 'जलसागर' थी। इसके फिल्मकार सत्यजीत राय थे। भारत सरकार द्वारा बेगम अख्तर को पद्मश्री और पद्मभूषण सम्मान से नवाजा गया। इसके अलावा उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार भी हासिल हुए। इनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी शामिल है। इतना ही नहीं उन्हें मल्लिका-ए-गजल के खिताब से भी नवाजा गया था।

30 अक्टूबर 1974 को बेगम अख्तर दुनिया को छोड़ गईं। इस दिन वह अहमदाबाद के एक मंच पर गायन कर रही थीं, जहां उनकी तबीयत खराब हुई और अस्पताल पहुंचकर उन्होंने दम तोड़ दिया। लखनऊ के ठाकुरगंज इलाके में उनकी मां के बगल में उनकी मजार है, लेकिन सबसे दुख की बात यह है कि जिस बेगम अख्तर ने भारतीय संस्कृति को गजल और ठुमरी दिया, उन्हीं की मजार लंबे समय तक देखरेख के अभाव में रही। लंबे समय से यह मांग होती रही है कि फैजाबाद में वह जिस कोठी में रहीं उसे संरक्षित किया जाए, लेकिन संस्कृति के पहरेदारों और सरकारों का ध्यान इस ओर कभी नहीं गया।

उम्मीद की नई किरण है सौर ऊर्जा

• आरती

किसी भी देश के विकास में ऊर्जा एक इंजन के रूप में कार्य करती है, लेकिन इस बात में भी कोई शक नहीं कि यह ऊर्जा रूपी इंजन विकास के साथ-साथ उस देश के पर्यावरण को भी बहुत नुकसान पहुंचाता है। ऐसे में देश के सामने यह समस्या खड़ी होती है कि वह विकास करे या पर्यावरण को बचाए। भारत ने अपने ऊर्जा रूपी इंजन को सौर ऊर्जा इंजन में बदल दिया। भारत एक उष्णकटिबंधीय भू-भाग वाला देश है, जहां लगभग 3000 घंटे सूर्य की किरणें जमीन पर पड़ती हैं। अगर भारत के भू-भाग पर दृष्टि डालें तो हमें यह भी पता चलेगा कि यहां लगभग 5000 लाख किलो वाट प्रति घंटा वर्ग मीटर के बराबर सौर ऊर्जा आती है। इसी ऊर्जा का उपयोग भारत अपने विकास में कर रहा है।

ग्रामीण इलाकों को रोशन करती सौर ऊर्जा : भारत की लगभग 70 फीसदी आबादी ग्रामीण इलाकों में रहती है। जहां बिजली नहीं पहुंच पाती या कम पहुंच पाती है। पहाड़ी इलाकों में तो बिजली की समस्या और भी विकराल है। भारत के ग्रामीण इलाकों की लगभग 60 फीसदी बिजली सौर ऊर्जा से आती है। सौर ऊर्जा के इसी विकास से ग्रामीण इलाकों में आज जीवन सरल हुआ है। भारत के लगभग 1,50,000 घर सौर ऊर्जा के माध्यम से ही रोशन हैं। देश में जनसंख्या के साथ-साथ ऊर्जा की मांग भी बढ़ती चली जा रही है जो कि आने वाले समय में भारत की अर्थव्यवस्था पर बहुत बुरा असर डाल सकती है। इसी को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने भारतीय रेलवे को बिजली की जगह सोलर ऊर्जा पर चलाने का प्रयास शुरू किया है।

दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में शामिल भारतीय रेल नेटवर्क, जोकि 62000 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है, लगभग 50 प्रतिशत बिजली पर चलता है। मध्य प्रदेश के वीना रेलवे में 1.7 मेगावाट का सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया गया। इस संयंत्र की उत्पादन क्षमता 25 लाख यूनिट होगी, जिससे कि रेलवे को 1.37 करोड रुपए का मुनाफा होगा। भारत के विभिन्न स्टेशनों और रेलवे स्टेशन की इमारतों पर अब तक लगभग 100 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं। भारतीय रेलवे में अब तक जिन स्टेशनों को सौर ऊर्जा से लैस किया गया है उनमें जयपुर, नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, गुवाहाटी, कोलकाता, वाराणसी, सिकंदराबाद, हैदराबाद आदि शामिल हैं।

भारत ने तेजी से सौर ऊर्जा का उत्पादन बढ़ाया है। दुनिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र तमिलनाडु के मोती क्षेत्र में है, जिसकी उत्पादन क्षमता 648 मेगावाट है। एशिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा संयंत्र मध्य प्रदेश का रीवा सौर ऊर्जा संयंत्र है। भारत सौर ऊर्जा के व्यापार में दुनिया में तीसरे नंबर पर आता है। यहां ऊर्जा की खपत तेजी से बढ़ रही है। सरकार का लक्ष्य है कि वे 2035 तक लगभग 40 फीसदी ऊर्जा की मांग को नवीकरणीय संसाधन से पूरा करे। अगर सौर ऊर्जा का उत्पादन बढ़ा तो युवाओं के लिए रोजगार भी बढ़ेगा क्योंकि एक सोलर प्लांट को बनाने में लगभग दो महीने लगते हैं। भारत के सौर ऊर्जा की तरफ बढ़ते कदम ग्रामीण, शहरी व आर्थिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध हो रहे हैं। पर यहां यह भी देखना जरूरी है कि विश्व ऊर्जा बाजार में भारत की ऊर्जा मांग 2016 तक 5 प्रतिशत थी जो कि 2040 तक बढ़कर 11 प्रतिशत हो जाएगी।

भले ही भारत में सौर ऊर्जा निर्माण प्रतिवर्ष 20 गीगावॉट किया जाता हो परंतु यह केवल 3 गीगावाट ऊर्जा की पूर्ति में ही सक्षम है। भारत को अभी अपनी इन कमियों पर भी सुधार करने की आवश्यकता है क्योंकि विश्व बैंक के अनुसार अभी भी भारत में 20 करोड़ लोगों के पास बिजली की सुविधा नहीं है। भारत को एक ऐसी सौर ऊर्जा रणनीति की जरूरत है जो लंबे समय तक विकास कर सके। अगर भारत एक ऐसी रणनीति तैयार कर लेता है तो भारत 2030 तक लगभग 42 अरब डॉलर और उपकरणों के आयात की बचत कर सकेगा जो कि भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करेगा। भारत की आबादी और ऊर्जा की मांग को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि सौर ऊर्जा भारत के विकास में एक उम्मीद की किरण बनी है।

सरकारों के साथ व्यक्तिगत प्रयास करने होंगे

• **श्रुति गोयल**

प्रकृति हमारी दुनिया की श्रृंगारकर्ता है। जल, भूमि, आग, वायु, पृथ्वी इसी प्रकृति के अभिन्न अंग हैं, जो मिलकर संसार में जीवन का संतुलन बनाए रखते हैं। लेकिन जब प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ने की कोशिश की जाती है तब क्या होता है?

'कभी गांव धूप से झुलस रहे,
कभी शहर शीत से सिकुड़ रहे
कहीं भूमि पानी को तरस रही,
कहीं बिन मौसम बादल बरस रहे।'

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व जलवायु परिवर्तन की समस्या से जूझ रहा है। इसका एकमात्र कारण भूमंडलीय ऊष्मीकरण (ग्लोबल वार्मिंग) है। मनुष्य द्वारा अत्यधिक औद्योगिकीकरण का परिणाम है कि वर्तमान में वायु मंडल में ग्रीन हाउस गैसें गर्मी विकिरण को अवशोषित कर रही हैं। इस कारण भारत व अमेरिका जैसे कई विकासशील व विकसित देशों को वर्षा ऋतु में अत्यधिक वर्षा, शीत ऋतु में कड़ी ठंड व ग्रीष्म ऋतु में झुलसाती गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम का अनुमान लगाना भी मुश्किल हो गया है।

भारतीय मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय मोहापात्र ने 'डाउन टू अर्थ' पत्रिका को बताया है कि आईएमडी ने 29 सितंबर को बंगाल की उत्तरी खाड़ी में निम्न दाब क्षेत्र के निर्माण की कम संभावना होने का अनुमान लगाया था। चेतावनी के अनुसार बिहार में भारी वर्षा की कम संभावना थी, लेकिन दक्षिण-पश्चिमी मानसून के लौटने में विलम्ब होने के कारण यह अनुमान गलत साबित हुआ। बिहार में लोगों को भारी बाढ़ का सामना करना पड़ा, जिसमें 100 से

अधिक लोगों की जानें गईं। मध्य-अगस्त में आईएमडी द्वारा ऐसी ही एक और भविष्यवाणी हिमाचल प्रदेश में भारी वर्षा होने की हुई थी, लेकिन वह यह बताने में असमर्थ रहे कि वर्षा कितनी भारी होगी व किस जगह को प्रभावित करेगी।

18 अगस्त को प्रदेश ने 1,024 प्रतिशत सामान्य से अधिक वर्षा का सामना किया व लगभग 25 लोग बाढ़ एवं भूस्खलन जैसी आपदाओं की चपेट में आ गए। इकोनॉमिक टाइम्स में प्रकाशित एक आर्टिकल के अनुसार भारत पिछले कुछ वर्षों से अत्यधिक गर्म व शुष्क मौसम से जूझ रहा है, जिसमें 2014 व 2015 में पड़े दुर्लभ सूखे के उदाहरण भी शामिल हैं। हालांकि यह समस्या केवल यहीं तक सीमित नहीं थी। 2005 में मुंबई, 2013 में उत्तराखंड, 2014 में कश्मीर व 2018 में केरल को अत्यधिक वर्षा के कारण भारी बाढ़ का सामना करना पड़ा था।

इंडिया टीवी डॉट कॉम पर प्रकाशित एक आर्टिकल में 2019 में पड़ी कड़ी ठंड को लेकर भारतीय मौसम विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. राजेन्द्र जनमनी ने कहा, 'यह प्रकृति का अनूठा जादू है और इसका प्रभाव समूचे उत्तर-पश्चिम भारत पर पड़ सकता है।' वहीं दूसरी ओर 'डाउन टू अर्थ' को विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने बताया कि 2019 ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे गर्म व शुष्क वर्षों में से एक था। इसके परिणाम स्वरूप कई जंगल बड़े पैमाने पर ध्वस्त हुए, जिसमें लगभग 46 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रफल आग से ध्वस्त हुए।

विभिन्न आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि किस प्रकार मानवीय गतिविधियों ने प्रकृति के संतुलन को उजाड़ कर रख दिया है। संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग व औद्योगिकीकरण से जलवायु चक्र अनियमित रूप से बदल रहा है व शहर अधिक प्राकृतिक आपदाओं की चपेट में आते जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र के अंतर सरकारी पैनल के अनुसार हमारे पास जलवायु परिवर्तन की गंभीर हानियों को रोकने के लिए सिर्फ 10 साल का समय बाकी है। यह जरूरी है कि सरकारों के साथ-साथ व्यक्तिगत स्तर पर भी इसे रोकने के लिए कदम उठाए जाएं।

संचार का सशक्त माध्यम है फोटो पत्रकारिता

• आशीष

फोटो पत्रकारिता संचार का एक ऐसा माध्यम है जिसमें खबरों को बिना शब्दों की मदद के पेश किया जाता है। प्रिंट माध्यम हो या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, फोटो या तस्वीरों के बिना यह सब अधूरे हैं। इसलिए फोटो पत्रकार की, किसी भी मीडिया हाउस में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है। किसी भी घटना का वर्णन करना हो तो फोटो एक बहुत ही जरूरी माध्यम है। यही नहीं फोटो शब्दों से ज्यादा पाठकों और दर्शकों पर अपना प्रभाव छोड़ते हैं। जो बात शब्दों से नहीं कही जा सकती वो फोटो से संभव है।

समाचारों में अगर तस्वीरें न हों तो समाचार को ठोस नहीं बनाया जा सकता। फोटो संचार का बहुत ही आवश्यक माध्यम है। वहीं इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में भी इसका भरपूर उपयोग किया जाता है। हालांकि वहां विजुअल्स की मदद भी ली जाती है। एक फोटो पत्रकार रिपोर्टर भी होता है। यह कार्य थोड़ा कठिन और जोखिमों से भरा भी होता है। इसके लिए आपको अपनी सोचने की क्षमता अलग रखनी होती है। अगर आप घटना स्थल पर समय पर नहीं पहुंचे तो आपको फील्ड से खाली हाथ अपने कार्यालय जाना पड़ सकता है। जिस तरह बिना खबरों के समाचार पत्र या मैगजीन और टीवी में समाचार नहीं दिखाए जा सकते ठीक उसी तरह फोटो के बिना हम कुछ नहीं कर सकते।

फोटो पत्रकारिता में समय का सूक्ष्म रूप भी बहुत मायने रखता है। यहां हर एक पल बहुत कीमती होता है। वहीं एक फोटो पत्रकार को एक फोटो के इंतजार में कई घण्टे भी खड़ा रहना पड़ता है। पत्रकारिता की दुनिया में फोटो पत्रकार की अहम भूमिका होती है। बिना फोटो पत्रकार के कोई भी समाचार प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता। फोटो हमारी खबर को मजबूत करती है और एक नई दिशा देती है। जिस तरह एक पत्रकार किसी खबर को अपनी भाषा और शब्दों के माध्यम से कलमबद्ध करता है ठीक उसी प्रकार एक फोटो पत्रकार खबरों को अपने कैमरे में कैद करता है।

बदलते दौर में जिस तरह फेक न्यूज का चलन बढ़ा है और सही खबरों को गलत या छेड़छाड़ करके प्रस्तुत किया जा रहा है उस समय खबरों को पुष्ट करने के लिए फोटो एक सशक्त माध्यम बन गया है। कहते हैं 'एक फोटो हजार शब्दों के बराबर होता है।' वहीं प्रिंट माध्यम में ही फोटो जरूरी नहीं होता बल्कि टीवी पत्रकारिता में भी 'शब्द तस्वीरों के गुलाम होते हैं।' यह दिशा पूरी रोमांच से भरी हुई है। आज हम सब पत्रकारों की बात करते हैं या उन्हें ही जानते हैं लेकिन फोटो पत्रकारों का भी पत्रकारिता में बहुत बड़ा योगदान रहा है। भारत की महिला फोटो पत्रकार होमी व्यारााल्ला नाम भी उन्हीं में से एक है। इसके अलावा रघु राय सहित आज बड़े पैमाने पर फोटो पत्रकार अपनी भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

फैशन इंडस्ट्री का महिलाओं पर बढ़ता दबाव

• लीशा

भारत में विभिन्न संस्कृति के लोग निवास करते हैं। लोग व्यक्तिगत मान्यताओं के समूह हैं, जो एक समाज का निर्माण करता है, जिसकी अपनी एक विचारधारा होती है। यही विचारधाराएं समाज के लिए कुछ मानकों का निर्धारण करती हैं। इन मानकों के जाल ने समाज में रहने वाली महिलाओं को प्राचीन काल से ही जकड़ा हुआ है। इन बंधनों को तोड़ने व इसके प्रति जागरुकता फैलाने की मुहिम समय-समय पर चलाई गई है। यह मुहिम औपचारिक तौर पर मौजूद तो है परंतु समाज के बहुत से भाग इनसे अछूते रह गए हैं। समाज में अभी भी महिलाओं को हर स्तर पर किसी न किसी रूप में शोषण का शिकार होना पड़ता है। इसमें एक मुख्य भूमिका फैशन इंडस्ट्री ने निभाई है। यही इंडस्ट्री तय करती है कि क्या सुंदर है? क्या बिकाऊ है? क्या जनता को भाता है और क्या नहीं?

फैशन जगत महिलाओं को एक वस्तु की तरह उपयोग करता है। एक समाज के तौर पर हम सभी, औरतों को एक बॉडी टाइप में देखना चाहते हैं। हम औरतों के शरीर को उस पुतले की तरह देखना चाहते हैं, जो दुकानों में सजता है। इसलिए बदलती हुई सुंदरता की परिभाषा के साथ औरतों से अपेक्षा की जाती है कि वे भी बदलें। समय-समय पर बाजार में चलने वाली फेस क्रीम, ट्रेंडी कपड़े, जीरो फिगर, हाई हील आदि को अपनाने के लिए औरतों को मजबूर किया जाता है और यह काम सिनेमा बखूबी करता नजर आता है। लड़कियों की पैंट बिना जेब या छोटी जेब की इसलिए बनाई जाती है ताकि सामान व पैसे रखने के लिए वह बाजार में उपलब्ध महंगे बैग/पर्स खरीदें।

एक महिला का बाजारीकरण न केवल उसके शरीर से किया जाता है बल्कि उसकी आधारभूत चीजों का भी बाजारीकरण होता है, जैसे अंतर्वस्त्र को बाजार में इतने अधिक दाम में बेचा जाता है ताकि इंडस्ट्री को मुनाफा हो, क्योंकि इसे खरीदना हर लड़की की जरूरत है। क्या हर लड़की यह जानने के बावजूद अपने रूप-रंग को आसानी से अपना पाएगी कि फिल्मों में नायक जिस नायिका से बेतहाशा प्यार करता है, वो लड़की हमेशा ट्रेंडी कपड़े पहनने वाली, गोरी और दुबली होती है। यही कारण है कि बाजार में आने वाले ब्यूटी प्रोडक्ट्स की इतनी ज्यादा बिक्री होती है, चाहे वे अधिक खर्चीले ही क्यों न हों।

फैशन इंडस्ट्री के हाथों में शरीर के साइज की कमान होती है। कपड़ों को ऑवरग्लास आकार वाले शरीर के लिए बनाकर पुतलों को पहना दिया जाता है। जब इन्हें किसी मॉल के बाहर डिस्पले में लगाया जाता है तब हजारों महिलाएं अपने शरीर को कोसते हुए निकल जाती हैं। फेंक्ट बॉडी या आइकॉन बॉडी के मापदंड के भीतर न आने वाली लड़कियों को अपने वास्तविक साइज के कपड़े ढूंढने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। साथ ही सहानुभूति या मजाक का पात्र भी बनना पड़ता है।

अत: यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि फैशन इंडस्ट्री ने न केवल महिला शरीर का एक वस्तु के समान उपयोग किया है बल्कि उसे सेक्शुअलाइज करने और उसके प्रति समाज में रुढ़िवादी विचारधारा (स्टीरियोटाइप मानसिकता) रचने में अहम भूमिका निभाई है। वर्तमान में फेमिनिज्म को केवल मुद्दा बनाने या नारा बनाने भर से महिलाओं की वास्तविक लड़ाई नहीं जीती जा सकती। इस लड़ाई को जीतने के लिए फेमिनिज्म के सही अर्थों को समझना आवश्यक है, जो समाज में पुरुषों जितना समान दर्जा पाने के साथ-साथ महिलाओं को खुद की स्वतंत्र पहचान समाज में स्थापित करने से भी है।

कोरोना वायरस : खोज से लेकर अब तक का सफर

● **मानसी बिष्ट**

कोरोना वायरस पर सबसे पहला अध्ययन एक महिला वैज्ञानिक डोरोथी हामरे ने किया था। कोरोना वायरस के संकेत 1930 के दशक में ही मिलने लगे थे। इस वायरस पर डोरोथी हामरे का पहला शोध पत्र 1966 में प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने इशारा किया था कि यह मनुष्य के श्वसन तंत्र पर चोट करने वाला घातक वायरस है। डोरोथी पहली वैज्ञानिक थीं, जिन्हें कोरोना प्रजाति के वायरस को अलग करने में कामयाबी मिली थी। इसके कुछ समय बाद डेविड टायरेल और मैल्कम ब्योने ने भी ऐसी ही कामयाबी हासिल की थी। डेविड टायरेल की ही प्रयोगशाला में जून अलमेदा ने पहली बार शोध करके बताया था कि कोरोना दिखता कैसा है।

कोरोना वायरस की संरचना मोटे तौर पर माला की तरह होती है। ग्रीक शब्द कोरोने से लैटिन शब्द कोरोना बना है। यह शब्द पहली बार 1968 में इस्तेमाल हुआ, लेकिन तब यह वायरस बहुत खतरनाक नहीं हुआ था। कोरोना परिवार के वायरस सार्स का खतरा इसी सदी में सामने आया। सार्स सबसे पहले साल 2002-03 में 26 देशों में फैला था और मर्स 2012 में करीब 27 देशों में। यह गौर करने की बात है कि जो मर्स वायरस सबसे ताकतवर था वह सबसे कम फैला था और जो कोविड-19 सबसे कमजोर है, उसने दुनिया को तड़पा रखा है। मर्स में तीन में से एक मरीज की जान चली जाती है। सार्स से दस में से कोई एक जान गंवाता है। लेकिन कोविड-19 सौ मरीजों में से दो की भी जान नहीं ले रहा है। गंभीर बात यह है कि अभी चिकित्सा विज्ञान के पास तीनों में से किसी का भी पक्का इलाज नहीं है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन अगर बार-बार कह रहा है कि संभव है, कोविड-19 की दवा या वैक्सीन कभी न मिले तो कोई आश्चर्य नहीं। सिर्फ कोरोना ही नहीं लगभग सभी वायरस अपनी प्रजाति बदलते रहते हैं, इसलिए किसी देश में ज्यादा मरीजों की मौत हो रही है और कहीं कम। हालांकि अभी सबसे बड़ा सवाल यह है कि अगर इलाज नहीं मिलेगा, तो क्या होगा? विशेषज्ञों के अनुसार या तो दवा मिल जाए या फिर इंतजार करना होगा कि दुनिया के 65 प्रतिशत लोगों को एक-एक बार कोरोना हो जाए। जब उन सबके शरीर में कोविड-19 की एंटीबॉडी तैयार हो जाएगी। जब इस वायरस को ठहराव नहीं मिलेगा तब संक्रमण में गिरावट आती जाएगी। कोविड-19 पर विजय प्राप्त करने के लिए महायुद्ध जारी है। खोज में लगे वैज्ञानिक यह भी उम्मीद कर रहे हैं कि इस बीच यह दुश्मन वायरस अपना स्वरूप न बदले और हमारे शिकंजे में आ जाए।

अर्थव्यवस्था हुई कोरोना पॉजिटिव

● **गीतू कत्याल**

पूरा विश्व जीवन की रेलगाड़ी पर सवार होकर गिरते-संभलते, स्थिति-परिस्थिति का सामना करते हुए अपनी गति में चल रहा था। इतने में अचानक ऐसी हलचल हुई, जिससे न केवल रेलगाड़ी प्रभावित हुई बल्कि सारे स्टेशनों पर भी हड़कंप मच गया। चीन के वुहान शहर से एक वायरस आया जिसने पूरी दुनिया को अपने प्रकोप में ले लिया। इस वायरस के कारण कोविड-19 महामारी ने जन्म लिया, जिसने मनुष्य के सामान्य जीवन को असामान्य कर दिया। बीमारी की रोकथाम के लिए लगाए गए लॉकडाउन ने पूरे समाज को पिंजरे में कैद कर दिया। यातायात के साधनों पर ब्रेक लग गया। विद्यालय-महाविद्यालय सूने हो गए। दफ्तर, दुकानें, फैक्ट्री, मॉल, होटल और उड़ानें ठप हो गईं।

नतीजा यह हुआ कि वैश्विक अर्थव्यवस्था ढह गई। चीन के अलावा करीब-करीब सब देशों की अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान उठाना पड़ा। अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, फ्रांस, कनाडा, जर्मनी और जापान जैसे देशों को अर्थव्यवस्था में भारी गिरावट का सामना करना पड़ा। महामारी से बचने के लिए भारत ने भी अन्य देशों की तरह तालाबंदी का रास्ता अपनाया और भारतीय अर्थव्यवस्था को भी नुकसान उठाना पड़ा। एक झटके में करोड़ों लोग बेरोजगार हो गए। लाखों लोगों के उद्योग ठप हो गए। चारों तरफ मंदी और कर्ज का जाल फैल गया। लगभग 50 लाख लोगों की नौकरियां चली गईं। भारतीय अर्थव्यवस्था पहले से ही मंदी का सामना कर रही थी। अप्रैल-जून 2019 की तिमाही में जीडीपी की दर 5 प्रतिशत पर थी, यह जुलाई-सितम्बर में घटकर 4.5 प्रतिशत हो गई। अक्टूबर से दिसंबर में 4.7 प्रतिशत और जनवरी से मार्च 2020 की तिमाही में जीडीपी 3.1 प्रतिशत थी।

इस वर्ष वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा जारी किए गए बजट से पूरे देश को बहुत उम्मीदें थीं लेकिन कोरोना के आगमन से अर्थव्यवस्था और गड्ढे में चली गई। पिछले वर्ष की पहली तिमाही में रियल जीडीपी 35.35 लाख करोड़ रुपए थी। अप्रैल 2020 वित्त वर्ष की पहली तिमाही की जीडीपी नकारात्मक है। भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर -23.9 पर्सेंट है। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की विकास दर -39.3 प्रतिशत, कंस्ट्रक्शन की -50.3 प्रतिशत, व्यापार होटल -47 प्रतिशत, वित्त सेवाएं व रियल एस्टेट -5.3 प्रतिशत व बिजली एवं अन्य सेवाओं की विकास दर -7 प्रतिशत है।

भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन ने जीडीपी में 23.9 प्रतिशत की गिरावट को चिंताजनक बताया। उन्होंने कहा कि 'नौकरशाही को अब आत्मसंतोष से बाहर निकलकर कुछ अर्थपूर्ण कार्रवाई करनी होगी। मौजूदा संकट के दौरान एक अधिक विचारवान और सक्रिय सरकार की आवश्यकता है।' राजन का कहना है कि शुरुआत में जो गतिविधियां एकदम तेजी से बढ़ी थीं, दुर्भाग्य से अब फिर ठंडी पड़ गई हैं।

भारत में 24 मार्च को तालाबंदी की घोषणा हुई थी। तालाबंदी के आर्थिक प्रभावों को दूर करने के लिए सरकार ने गरीब कल्याण योजना चलाई, जिसके अंतर्गत 1 लाख 70 हजार

करोड़ की राशि लोगों के खाते में और अनाज के रूप में दी गई। इसके अलावा अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए 20 लाख करोड़ के आर्थिक राहत पैकेज की घोषणा भी हुई थी। दावा किया गया था कि अर्थव्यवस्था को राहत पहुंचाने के लिए जीडीपी का 10 प्रतिशत खर्च किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि यह पैकेज आत्मनिर्भर भारत की अहम कड़ी के रूप में कार्य करेगा। मोदी ने कहा कि हमें 5 स्तंभ अर्थव्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर, जनसांख्यिकी, मांग और प्रणाली पर ध्यान केंद्रित करना है।

पूरा पैकेज 20 लाख करोड़ का था, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और ही थी। 20 लाख करोड़ में से 8 लाख करोड़ की घोषणा भारतीय रिजर्व बैंक ने पहले ही 'बैंक तरलता' के रूप में कर दी थी। बचे 12 लाख करोड़ तो गरीब कल्याण योजना में 1.7 लाख करोड़ की राशि को भी इस पैकेज में सम्मिलित कर लिया गया। 12 लाख करोड़ में से 1.7 लाख करोड़ हटाने के बाद लगभग 10 लाख करोड़ का पैकेज बचा। 10 लाख करोड़ में भी कुछ योजनाओं की घोषणा सरकार पहले ही कर चुकी थी। आर्थिक राहत पैकेज में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों को तीन लाख करोड़ का लोन देने का ऐलान किया गया। बिजली वितरण कंपनियों के लिए 90 हजार करोड़, किसानों को दो लाख करोड़ का रियायती कर्ज, रेहड़ी-पटरी वालों के लिए 5000 करोड़ की रकम जारी की गई है। प्रवासी मजदूरों को दो महीने के लिए मुफ्त राशन उपलब्ध कराया गया, जिसकी लागत 3.5 हजार करोड़ आई। एक लाख करोड़ मनरेगा के तहत घर लौटे प्रवासी मजदूरों को देने की घोषणा भी की गई थी। इसके बाद सरकार के पैकेज को देखें तो समझ आता है कि 20 लाख करोड़ रुपये शब्दों की हेरा-फेरी थी। पैकेज का अधिकतर हिस्सा लोन है जो बैंक देता है, सरकार नहीं। पैकेज जीडीपी का 10 प्रतिशत बताया गया था जबकि यह जीडीपी है 1-3 प्रतिशत तक।

इंग्लैंड की बार्कलेज कंपनी के अनुसार आर्थिक पैकेज केवल 1.5 लाख करोड़ का है। एचएसबीसी के अनुसार पैकेज जीडीपी का 10 प्रतिशत नहीं 1 प्रतिशत है। आर्थिक संकट पर पूर्व वित्त मंत्री पी चिदंबरम का कहना है कि सरकार को गिरावट के बारे में पहले से अंदेशा था लेकिन सरकार ने स्थिति संभालने के लिए कुछ नहीं किया। पी. चिदंबरम ने कहा यह स्थिति सरकार के लिए शर्म का विषय होना चाहिए लेकिन वो अपनी गलती भी स्वीकार नहीं करेगी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ट्विटर पर लिखा, 'बीजेपी सरकार के पिछले छह साल के नफरत भरे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी उपलब्धि यही रही है। बांग्लादेश भी भारत को पीछे छोड़ने वाला है।'

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने अर्थव्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए सरकार को सुझाव दिया है कि सरकार को लोगों की आजीविका सुरक्षित करनी चाहिए। नकदी मदद के जरिए लोगों को खर्च लायक पैसा उपलब्ध कराना चाहिए। सरकार को कारोबारियों के लिए पूंजी उपलब्ध करानी चाहिए। इसके लिए सरकार को समर्थित क्रेडिट गारंटी प्रोग्राम चलाना चाहिए। सरकार को वित्तीय सेक्टर की समस्याओं को हल करने में मदद करनी चाहिए। अर्थव्यवस्था पर निष्कर्ष लिखना मुश्किल है पर भारतीय अर्थव्यवस्था की दिशा बेहद चिंताजनक है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुसार इस वित्त वर्ष के दौरान भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी में 10.3 फीसदी की गिरावट आएगी। अगर ऐसा हुआ तो भारत बांग्लादेश से नीचे चला जाएगा। मूडीज और फिच रेटिंग ने भारत की रेटिंग में कमी की है।

अर्थव्यवस्था में गिरावट इसी तरह जारी रही तो भारत की स्थिति बेहद कमजोर हो जाएगी। गरीबी, बेरोजगारी बढ़ जाएगी। रोजगार देना मुश्किल हो जाएगा। भुखमरी बढ़ जाएगी। निर्धन रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हो जाएगी। सरकार को चाहिए कि वह अर्थव्यवस्था से संबंधित आंकड़ों को देश की जनता के सामने खुलकर प्रस्तुत करे। अपनी राजनीति के साथ देश की मंदी पर भी ध्यान दे। सरकार ऐसे पैकेज बनाए जिससे हर वर्ग के लोगों को फायदा हो व सहायता मिले। अगर अर्थव्यवस्था पर अभी भी ध्यान नहीं दिया गया तो इतने सालों की मेहनत पर पानी फिर जाएगा। सरकार के दिखाए गए सपने, सपने ही रह जाएंगे।

एर्दोआन का शासन और तुर्की की राजनीति

• **दीपक कुमार त्रिवेदी**

हाल के दिनों में तुर्की का विश्व की राजनीति पर प्रभाव बढ़ा है। सीरिया और खाड़ी देशों के विवादों में तो तुर्की पहले से ही था, अब वह दुनिया के कई अन्य मुद्दों पर खुले तौर पर सामने आ रहा है। यूरोपियन देशों के साथ शरणार्थी विवाद, अमेरिका के साथ इस्लामोफोबिया का विवाद और लीबिया के विवाद में उलझने के बाद अब तुर्की कश्मीर मुद्दे पर भी भारत को आंख दिखा रहा है। इन सभी का कारण हैं तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब एर्दोआन। एर्दोआन के प्रभाव का यह कोई नया दौर नहीं है। इन्होंने इससे पहले भी राजनीति में कई बड़े दांव खेले हैं। इन दांवों को समझने के लिए हमें इनके राजनीतिक इतिहास पर नजर डालनी होगी।

शुरुआती राजनीति में इस्लाम का प्रभाव : एर्दोआन का झुकाव तुर्की की इस्लामिक राजनीति की तरफ पहले से ही था। मारमर विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान यह झुकाव और बढ़ा। इसी समय उन्होंने नेकमतीन एर्बाकन से मुलाकात की, जो एक दिग्गज इस्लामी राजनीतिज्ञ थे। एर्बाकन के नेतृत्व वाली पार्टियों में एर्दोआन सक्रिय होने लगे। हालांकि धार्मिक रूप पर आधारित राजनीतिक दलों पर तुर्की में प्रतिबंध लगा दिया गया था। 1994 में एर्दोआन वेलफेयर पार्टी के टिकट पर इस्तांबुल के मेयर चुने गए।

मेयर के पद पर एक इस्लामी व्यक्ति के चुनाव ने धर्मनिरपेक्षतावादी स्थापना को हिला दिया, लेकिन एर्दोआन एक सक्षम और कुशल प्रबंधक साबित हुआ। उसने शहर के

बीच में एक मस्जिद के निर्माण का विरोध किया, लेकिन शहर के सार्वजनिक कैफे में शराब की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया। 1998 में उन्हें एक कविता का पाठ करने के बाद धार्मिक घृणा को उकसाने के लिए दोषी ठहराया गया था, जिसमें मस्जिदों की तुलना बैरक, मीनारों से संगीनों और सेना के प्रति वफादार लोगों से की गई थी। इसके चलते एर्दोआन को 10 महीने की सजा हुई। इसके बाद उन्होंने मेयर के पद से इस्तीफा दे दिया।

प्रधानमंत्री पद से राष्ट्रपति तक का सफर : जेल से बाहर आने के बाद एर्दोआन ने एक नई राजनीतिक पार्टी का गठन किया। एकेपी नाम से मशहूर जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी ने साल 2002 में चुनाव जीत लिया। रजब तैयब एर्दोआन नए प्रधानमंत्री बनाये गये। प्रधानमंत्री के तौर पर तीन कार्यकालों में एर्दोआन ने तुर्की के संविधाान में कई बदलाव किए। जब एक अदालत में एर्दोआन की पार्टी एकेपी को अवैध घोषित कर दिया गया तो तुर्की के राष्ट्रपति ने संवैधानिक बदलाव करके न्याय व्यवस्था को सरकार के अधीन लाने का तरीका चुना।

मिलिट्री को सरकार के नियंत्रण में लाने के लिए इन्हें सिविल कोर्ट के अधीन लाया गया। एर्दोआन ने जितनी निर्ममता से संविधानिक कांटों को अपने रास्ते से हटाया उतनी ही निर्ममता से राजनीतिक विरोधियों को भी शांत कर दिया। 2011 के चुनाव में एर्दोआन ने एक नए संविधान को देश के सामने रखने का वादा किया, लेकिन यह रेफरेंडम चुनाव में पास न हो सका, क्योंकि एकेपी पार्टी के अनुसार एक व्यक्ति केवल तीन बार प्रधानमंत्री बन सकता है। एर्दोआन ने 2014 में संविधानिक परिवर्तन करके देश की शासन व्यवस्था को राष्ट्रपति के अधीन ला दिया। हालांकि, इसका परिणाम एकेपी के लिए उल्टा हुआ। एकेपी पार्टी को 2015 के पार्लियामेंट्री चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। त्रिकोणीय संसद के कारण कोई भी पार्टी सरकार नहीं बना पाई।

ऐसे में 2016 में दोबारा पार्लियामेंट्री चुनाव हुए और एकेपी की जीत हुई। एर्दोआन देश के पहले जनता द्वारा चुने गए

राष्ट्रपति बनाए गए। यह कार्यकाल एर्दोआन के लिए सबसे खतरनाक था। सेना के एक समूह ने तख्ता पलट करने की कोशिश की। इस प्रयास में कई लोगों की जानें गईं। एर्दोआन एक बार फिर अपनी सत्ता को बचाने में कामयाब हुए। दोषी अधिकारियों को कड़ी सजा दी गई। बड़ी संख्या में सैनिकों और तख्ता पलट का समर्थन करने वाले लोगों को जेलों में भरा गया। इनमें डॉक्टर, टीचर और कई सरकारी कर्मचारी भी शामिल थे।

दोबारा मिला राष्ट्रपति पद : 2017 में तुर्की के संविधान में बड़े बदलाव किए गए। राष्ट्रपति की ताकत को बढ़ाया गया। 2018 में हुए अगले राष्ट्रपति चुनाव में एर्दोआन की एक बार फिर जीत हुई, लेकिन ये चुनाव उनकी पार्टी के लिए मुश्किल साबित हुआ। इस्तांबुल, अंकरा और इज्मद जैसे शहरों में एकेपी को हार का सामना करना पड़ा।

विदेशों में बढ़ता प्रभाव : दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने के साथ ही एर्दोआन ने देश के बाहर की राजनीति पर प्रभाव डालना शुरू कर दिया। सीरिया में अमेरिकी सैनिकों के हटते ही कुर्द शासित इलाकों में हमले हुए। साइप्रस में उत्तरी साइप्रस को तुर्की से जोड़ने का प्रयास शुरू कर दिया गया। लीबिया के युद्ध में तुर्की ने जीएनआर सरकार का साथ देना शुरू कर दिया। इन सबके अलावा एर्दोआन सरकार अमेरिका और रूस के बाहरी दखल पर हमेशा से नाराज रही है। रूस के साथ अच्छे संबंध होने के बावजूद दोनों देशों की सेनाएं हाल ही में सीरिया में आमने-सामने आ गई थीं।

एर्दोआन का सबसे बड़ा हथियार यूरोप में चल रहा पलायन है। अफ्रीका और खाड़ी देशों से भागते लाखों लोगों के लिए तुर्की सबसे आसान रास्ता है, लेकिन इन लोगों को यूरोप में आने से रोकने के लिए यूरोपियन यूनियन ने तुर्की के साथ समझौता किया हुआ है। एर्दोआन इस समझौते का बार-बार अपने फायदे के लिए प्रयोग करते हैं। विश्व के किसी भी विवाद में यूरोपीय देशों को साथ में लाने के लिए वह प्रवासियों के दल को छोड़ने की धमकी देते रहे हैं। अपनी राजनीतिक शक्तियों और भौगोलिक स्थिति का प्रयोग एर्दोआन अपने फायदे के लिए करते आए हैं।

शैक्षिक यात्रा में गांधीजी को जानना

• सचिन चौहान

सोचता हूं बैठ करके, कुछ घड़ी विश्राम कर लूं
किंतु कोई कह रहा, दिन-रात चलना जिंदगी है...

भ्रमण तथ्यों को वास्तविक और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हुए व्यक्ति के अनुभवों में वृद्धि करता है। इससे ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की प्राकृतिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का ज्ञान होता है। भ्रमण से संसार की घटनाओं का ऐसा ज्ञान प्राप्त हो सकता है जो किसी पुस्तक को पढ़कर भी शायद न मिल सके। इसी महत्व को देखते हुए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर गांधी स्टडी सर्किल ने इस वर्ष शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया। पर्यटक दल के सदस्यों की कुल संख्या 24 थी। इसमें 15 विद्यार्थियों के साथ संयोजक डॉ. देवेंद्र कुमार, सह-संयोजक डॉ. सुभाष चंद्र डबास व सर्किल से जुड़े शिक्षकगण शामिल थे। हमारी यात्रा का शुभारंभ नई दिल्ली से 12 मार्च 2020 को दोपहर 2 बजे हुआ। सभी विद्यार्थियों के लिए 2 समितियां बनाई गई-गणना समिति व अनुशासन समिति।

अपरान्ह 3.20 पर आश्रम एक्सप्रेस में बैठकर हम सब गुजरात के लिए रवाना हो गए। साथियों के साथा यात्रा का अनुभव निराला था। सफर लंबा होने के बावजूद समय का पता ही नहीं चला। ट्रेन लगभग 15 घंटे की यात्रा के बाद सुबह 6.10 बजे साबरमती जंक्शन पर पहुंची। यहां वृक्षों पर अनगिनत पक्षी बैठे थे। मानो कृत्रिम खिलौनों से सजाया गया हो। जितनी देर में हमें लेने के लिए बस पहुंचती हमने इस दृश्य को अपने कैमरों में कैद कर लिया। इसके बाद हम सब बस में बैठकर गुजरात विद्यापीठ गेस्ट हाउस पहुंचे, जिसे पहले ही बुक करवा लिया गया था। संयोजक महोदय के आदेश पर हम सब अपने-अपने कमरों में सामान व्यवस्थित करके नाश्ते के लिए कैंटीन में इकट्ठा हुए। साबरमती नदी के तट पर बसा अहमदाबाद गुजरात का एक प्रमुख पर्यटक स्थल है।

लंबे समय तक यहां बापू मोहनदास करमचंद गांधी के आदर्शों का शासन रहा, जो कि आज भी प्रासंगिक है।

हम सभी अगले दिन नित्य कर्म से निवृत्त होकर सर्वप्रथम कोचरब आश्रम पहुंचे। यह बापू द्वारा संगठित प्रथम आश्रम था और उनके बैरिस्टर मित्र जीवनलाल देसाई द्वारा भेंट किया गया था। आश्रम में सत्याग्रह, स्वदेशी और स्वावलंबन जैसे विचारों पर जोर दिया जाता था। यहां आकर ऐसा महसूस हुआ जैसे बापू आज भी हमारे बीच हैं। इसके पश्चात हम साबरमती आश्रम पहुंचे, जो कि कुछ ही मिनटों की दूरी पर था। आश्रम द्वारा हमें गाइड उपलब्ध कराया गया। हमारी गाइड सुरभी ने इस तरह आश्रम का बखान किया मानो बापू हमें अपने आप अपने घर के बारे में बता रहे हों। फोटो खींचने का सिलसिला बिना रुके चलता रहा।

प्रत्येक प्रांत के चरखों की प्रदर्शनी के बाद बिजली से स्वचालित चरखा देखा, जिस पर गांधीजी ने एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया था। समय हुआ सुबह 11.30 का, हम गांधीजी के कुंज पहुंचे, जहां उनका विश्राम गृह, माता कस्तूरबा का कमरा, रसोई, जिसमें राशन रखने की सुव्यवस्थित जगह थी और घर की सुंदरता में चार-चांद लगाने के लिए घर के बीचों बीच आंगन था। यह कुंज किसी बड़ी हवेली जैसा था। इसके बाद हम लाल दरवाजा सड़क बाजार की तरफ खरीदारी करने निकल गए। हम सब ने उपहार चुनने में एक दूसरे की मदद की। शाम हो चली थी। पावन बेला से निकलकर हमने अतिथि गृह की ओर प्रस्थान किया। वहां पहुंचकर गुजराती थाली का स्वाद चखा। दिन भर की यात्रा का स्मरण करते हुए मित्रों के साथ बातचीत करके सो गए।

अगले दिन हमें 'स्टेचू ऑफ यूनिटी' देखने जाना था, जिसके लिए सुबह जल्दी निकलना जरूरी था। अत: हम प्रात: 5.30 बजे ही विद्यापीठ से स्टेचू ऑफ यूनिटी देखने के लिए रवाना हो गए, जो हमसे 300 किमी की दूरी पर था। विश्व की सबसे ऊंची इमारत को दूर से देखकर ही दिल गदगद हो उठा। कोरोना वायरस के कारण गैलरी में पहुंचने से पहले हमारी स्क्रीनिंग हुई। यहां से तस्वीरें लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करने का अपना ही मजा था। प्रतिमा के आसपास प्रांगण में जंगल सफारी, पुष्प गार्डन, सेल्फी प्वाइंट, सरदार सरोवर डैम को देखते हुए और चाय की चुस्कियां लेते-लेते शाम के 6 बज गए। अंधेरा होने के बाद हम सब लेजर शो देखने गए। लेजर शो में लौह पुरुष के यौवन अवस्था का चित्र चलते ही रोंगटे खड़े हो गए। वास्तुकार 'राम वी सुतार', जिन्होंने इसका वास्तु कार्य किया उनके मन में देशभक्ति की भावना को मैं भांप सकता था। इसके बाद हम वहां से निकल गए और रास्ते में रात्रि का भोजन करके विद्यापीठ पहुंचते ही निद्रा में लीन हो गए।

16 तारीख को हम कांकरिया झील देखने गए। इस झील का निर्माण कार्य सन् 1751 में सुल्तान कुतुब-उद-दिन अहमद शाह के कार्यकाल में पूर्ण हुआ था। यह झील हर साल दिसंबर में होने वाले कांकरिया उत्सव के लिए मशहूर है। इसके बाद का दिन इस्कॉन मंदिर और दांडी बुटीक देखने में खर्च हो गया। शैक्षिक भ्रमण का एक ही दिन शेष था। अहमदाबाद में हमारे आखरी दिन की शुरुआत विद्यापीठ के रजिस्ट्रार राजेंद्रजी के संबोधन से हुई, जिसमें उन्होंने गांधीजी के 12 वचनों पर बात की। इसके पश्चात रजिस्ट्रार साहब ने हमसे विद्यापीठ के मोरारजी देसाई संग्रहालय, छात्रावास और ट्राइबल संग्रहालय भ्रमण करवाया। सबसे पहले हम संग्रहालय पहुंचे। यहां मोरारजी देसाई के जीवन से जुड़ी कई यादगार वस्तुएं मौजूद थीं, जैसे 'निशान-ए-पाकिस्तान' का खिताब। शाम हो चली थी। अहमदाबाद को अलविदा कहने का समय करीब आ रहा था। मार्ग में अहमदाबाद का साइन बोर्ड, साफ शहर, जगमगाती रोशनी मन को रोमांचित कर रही थी। यह यात्रा हमेशा हम विद्यार्थियों के स्मृति पटल पर अंकित रहेगी।

आँख झपकी... खुली तो लगा उदयपुर पहुंच गए

• प्रज्ञा सैनी

हर सफर सुहाना होता है और अगर इस पर अपनों का साथ मिल जाए तो क्या ही कहने। ऐसा ही एक सफर हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने भी किया। विभाग के विद्यार्थी और प्राध्यापकों ने उदयपुर और माउंट आबू घूमने की योजना बनाई और आठ अक्टूबर 2019 को हम सब निकल पड़े राजस्थान की ओर। हमारा सफर निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से शुरू हुआ। रेल में 12 घंटे का सफर कब बीत गया, एहसास ही नहीं हुआ। लगा जैसे आंख झपकाई और उदयपुर पहुंच गए।

यह सब इसलिए हो पाया क्योंकि शरारती दोस्त साथ थे। हम विद्यार्थियों के साथ पांच शिक्षक भी इस ट्रिप पर आए थे। विभाग के संयोजक राकेश सर और प्रज्ञा मैम, प्रदीप सर, निशा मैम और श्वेता मैम। एक दूसरे से नाश्ता-खाना छीनते हुए और कहानी-किस्से सुनाते हुए सफर कट गया। हंसी मजाक का शिक्षकों ने भी जमकर लुत्फ उठाया। उदयपुर पहुंचते ही हम सब स्टेशन के बाहर खड़ी बस, जो हमारा इंतजार कर रही थी, में सवार हुए। उसने हमें होटल से करीब आधा किलोमीटर दूर उतार दिया। उसके आगे बस के जाने का रास्ता नहीं था। सभी बस से उतर गए। सामान उठाने के लिये एक ऑटो बुक किया गया और बाकी सभी पैदल चल दिये। पिछोला लेक के करीब होटल लेक व्यू पहुंच कर सभी बुनियादी जरूरतों से फारिग होकर नाश्ता करने हाजिर हुए। नाश्ते के बाद हमारा पहला मकाम था उदयपुर का मशहूर सिटी पैलेस।

राजस्थान का सबसे बड़ा शाही परिसर सिटी पैलेस है। जैसा इसके बारे में पढ़ा और सुना था, वास्तव में यह उससे अधिक आकर्षक था। सुंदर व जटिल वास्तुकला का एक अद्भुत नमूना, जिसकी प्रत्येक दीवार महाराजा उदय सिंह और उनके पुत्र महाराणा प्रताप के जीवन संघर्षों को बयान करती है। भीतर हमने एक गाइड को साथ लिया, जिसने महल से जुड़ी तमाम कहानियां मनोरंजक अंदाज में हमसे साझा की। आकर्षक शीष महल, जनाना महल और शाही मण्डप इस महल के केंद्र बिंदु हैं। वैसे तो यहां कई फिल्मों की शूटिंग हुई है पर प्रियंका चोपड़ा और निक जोनस की शादी के दौरान यह शाही मण्डप एक बार फिर सुर्खियों में आया था।

सिटी पैलेस में यादगार लम्हे बिताने के बाद हम फतेह सागर पहुंचे। ट्रेन में 12 घण्टे सफर की थकान और उस पर सिटी पैलेस का पैदल भ्रमण बदन तोड़ने वाला था। फतेह सागर से ढलती सूरज को देखना बेहद सुकून भरा था। फतेह सागर को दिल भर देखने के बाद मौका था उसके बीचों बीच स्थित नेहरू वाटिका को देखने का। लिहाजा हम सब मोटरबोट में बैठकर नेहरू वाटिका पहुंचे और वहां चारों तरफ से आ रही हवा हमारे अंदर तक पहुंची। नेहरू वाटिका से निकलने के बाद पूरी मंडली ने झील के किनारे बैठकर चाय का आनंद लिया। करीब शाम 7 बजे हम होटल पहुंचे और सभी ने आराम किया। फिर सभी अपने-अपने गुट बनाकर निकल पड़े किफायती दामों में पसंद का खाना खाने। लौटकर सभी

अपने अपने कमरों में गए, जहां हर कमरे में 3-4 लोगों की व्यवस्था थी। कायदे से सभी को रात में सो जाना चाहिए था, लेकिन मित्र मण्डलियों के इरादे कुछ अलग थे। हुआ यूं कि सब रात भर अपने-अपने कमरों में जागकर गप्पे मारते रहे। कहने को सब थके हुए थे।

अगली सुबह हम 9 बजे अपनी अगली लोकेशन सहेलियों की बाड़ी पहुंच गए। यह स्थान अपने खूबसूरत बगीचों के लिए बहुत विख्यात है। जानने समझने से ज्यादा यह जगह हम सभी के लिए फोटोशूट के लिहाज से अधिक महत्वपूर्ण थी। इसके बाद हम सब पहुंचे शिल्पग्राम। यह परंपरागत शैली में बनाई गई 26 झोपड़ियों का एक छोटा सा पुरवा है। यह एक तरह का नृवंशविज्ञान संग्रहालय है, जो पश्चिमी क्षेत्र में रहने वाली आदिवासी जनसंख्या की जीवन शैली दर्शाता है। हर साल यह गांव कई थियेटर के त्योहारों की मेजबानी करता है। यहां भारत के विभिन्न राज्यों से लोग आते हैं और भाग लेते हैं। कलाकार और कारीगर शिल्प दर्शन में अपने काम को प्रदर्शित करते हैं। इस मेले में वे अपने काम को ग्राहकों को भी बेचते हैं। यहां हमने थियेटर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद उठाया। मंच पर 'भरी पिचकारी मार गयो रे' लोकगीत ने हमें कदम थिरकाने पर मजबूर कर दिया। करीब साढ़े तीन बजे हम सभी निकल पड़े अपने अगले स्पॉट सज्जनगढ़ का किला। यह किला बहुत ऊंचाई पर मौजूद है। चारों ओर घने जंगल से घिरा। यूं तो ऊपर जाने के लिए गाड़ियों की व्यवस्था भी थी किन्तु सभी साथियों ने निश्चय किया कि यह सफर हम पैदल ही पूरा करेंगे। 'हाऊ इज द जोश', 'हाई सर' वाली फीलिंग्स के साथ अपनी टिकट्स लेकर सब चल दिये। पर जैसे-जैसे ऊपर बढ़ते गए थकान बढ़ती गई और हिम्मत टूटती गई। बीच-बीच में आराम करते, फोटो खींचते हुए, हंसते-रोते सब किले तक पहुंच ही गए। किले का प्रांगण उस वक्त मखमली बिस्तर से भी ज्यादा प्यारा लग रहा था। सभी उस हरे-भरे प्रांगण में लेट गए। खुले आसमान के नीचे। इस किले से दिख रहे नजारे की जितनी प्रशंसा करें, उतना कम है। मान्यता है कि 132 साल पहले मेवाड़ के राजा सज्जन सिंह ने खास तौर पर मानसून के बादलों को देखने और बारिश का अनुमान लगाने के लिए इस महलनुमा किले का निर्माण करवाया था। अंधेरा होने को था और स्थानीय लोगों के अनुसार यह अंधेरा खतरे के साथ आता है। जंगली जानवरों के हमले का खतरा। अब वक्त था संयम और सावधानी बरतने का चूंकि अपनी मनमानी से हमने पैदल अकेले जाने का निर्णय किया था। ऐसे में सर की डांट का डर भी सता रहा था। बहरहाल, सभी की गिनती हुई और एक चेन बनाते हुए हम लोग नीचे की ओर चल पड़े।

इस दौरान सभी लड़कों ने एक घेराबंदी सी करके लड़कियों की सुरक्षा भी की, क्योंकि टीचर साथ न होने पर हम सभी एक दूसरे की जिम्मेदारी थे। मात्र 30 मिनट में हम नीचे पहुंच गए। बस में बैठते ही जिस हरारत भरी थकान को सबने महसूस किया वो वाकई शरीर को तोड़ देने वाली थी। सब होटल पहुंचे। खाना खाकर थोड़ी देर एक-साथ बैठे और सफर की बातचीत की। फिर अपने कमरों में आकर सो गए, क्योंकि सुबह अब घर के लिए रवाना जो होना था। वापसी के सफर में बस के अंदर एक छोटा सा मुशायरा शुरू हो गया। सचमुच इससे सुंदर घर वापसी की मेरी कल्पना भी नहीं थी। ट्रिप के आयोजन के लिए सभी छात्र विभाग व अध्यापकों के आभारी हैं। एक ऐसी ही ट्रिप की आशा हमें ताउम्र रहेगी, क्योंकि निदा फाजली का वो शेर हमेशा जहन में आता है कि 'न जाने कौन सा मंजर नजर में रहता है, तमाम उम्र मुसाफिर सफर में रहता है।'

रूठ न जाना, मैं जो कहूं तो

• विद्या शर्मा

आपको शीर्षक थोड़ा अटपटा लग रहा होगा, लेकिन लेख के अंत तक पहुंचते हुए आप समझ जाएंगे कि शीर्षक ऐसा क्यों है। यह लेख सूरजकुंड मेले पर लिखा गया है। आपका अपने कस्बे में लगने वाले मेले से मन ऊब गया हो तो एक बार हरियाणा राज्य के फरीदाबाद शहर में लगने वाले सूरजकुंड मेले का दर्शन करने जरूर जाइए। सन् 1987 में शुरू हुआ यह मेला, जिसकी उम्र आज तकरीबन 34 वर्ष की हो गई है, शायद अपने शुरुआती दौर में भी उतना ही लोकप्रिय होगा जितना कि आज है। वर्ष 2004 में आई फिल्म 'वीरजारा' में एक गाना है 'ऐसा देश है मेरा'। इस गाने में मेले की खूबसूरती को परंपरागत भारतीय संस्कृति के बरक्स रखकर उसका बखान किया गया है।

सूरजकुंड मेले की मिसाल भी कुछ ऐसी ही है। हर साल मेले की एक थीम रखी जाती है। इस साल हुए सूरजकुंड मेले की थीम हिमाचल प्रदेश रखी गई। पूरा मेला हिमाचली संस्कृति से सुसज्जित था, जिसे देखने के लिए लाखों की संख्या में लोग हाजिर हुए। हिमाचली संस्कृति को मेले के जरिए अनुभव करने वाले लोगों में इस साल मैं भी शुमार हुई। जो लोग मेले में जा पाए, उन्होंने वहां खूब लुत्फ उठाया। लेकिन जो नहीं जा सके, उन्हें मैं अपने इस लेख के माध्यम से सूरजकुंड के भ्रमण पर ले चलतीं हूं।

भिन्न-भिन्न कलाकारों की कलाकारी से सुसज्जित इस मेले में ढेर सारी भीड़, ढेर सारे झूले, खाने-पीने के लिए अनेकों प्रकार के पकवान मौजूद थे। खरीदारी करने के लिए देश के अलग-अलग राज्यों की मशहूर वस्तुएं व व्यंजन मिल रहे थे। लाल-पीले, हरे-भूरे रंग के बालों वाले विदेशी दर्शक आपका-हमारा, हम सभी का मन मोह लेते हैं। हर साल बुजुर्गों सहित छात्रों, दिव्यांगजनों के लिए ऑनलाइन टिकट बुकिंग करने पर 50 प्रतिशत की छूट रहती है, जिसकी राशि निश्चित है। थोड़ा लालच और थोड़ा उल्लास लिए परिजन अपने प्रियजनों को मेले में झूले झुलाने के लिए ले आते हैं। मेले में बेहतरीन चाट का स्टॉल मौजूद था, जहां लोग अपने प्रेम रस में चाट का चटपटा रस घोल, स्वाद में इजाफा लिए बेहद खुश दिखाई पड़ रहे थे।

मेला घूमने आए युवाओं का तो क्या ही कहना! कुछ को सेल्फी-सेल्फी खेलने से फुर्सत नहीं होती है तो कुछ अपनी यारी-दोस्ती में मशगूल मेले का लुत्फ उठाते नजर आते हैं। आपको मेले में कुछ ऐसे छोटे बच्चे तथा युवा भी देखने को मिल जाएंगे, जिन्होंने शायद बरसों से ढोल-नगाड़ों की धम-धम, डम-डम की आवाज नहीं सुनी होती है। इसी वजह से मेले में ढोल की आवाज सुनकर उनके पैर रोके नहीं रुकते। कुछ कदम आगे बढ़ने पर नजारा यूं होता है कि 50-50 रुपए में पगड़ी/साफा बांधा जा रहा होता है। अब सिर्फ 50 रुपए में मुखिया वाला आनंद मिल जाए फिर तो क्या कहने। मेले के एक कोने में बैठकर चाक घुमाते हुए कुम्हार ने शायद सबसे ज्यादा युवाओं का ध्यान अपनी ओर खींचा। उस कुम्हार की खास बात यह थी कि वह न केवल स्वयं मटके बना रहा था बल्कि अपने ग्राहकों को भी अपने लिए मिट्टी के बर्तन बनाने का मौका दे रहा था।

जिस नई पीढ़ी ने कभी मिट्टी के बर्तनों में खाना-पीना तक न खाया हो उसे चाक पर हाथ आजमाने का मौका मिल जाए तो इससे आकर्षक चीज क्या होगी। एक की आमदनी का जरिया दूसरे के लिए मजेदार अनुभव का मौका बन जाता है। मैंने मेले में जितना कुछ देखा आपको बताने की पूरी कोशिश की, लेकिन एक नजारा मेरे जहन से उतारे नहीं उतरता है। हुआ यूं कि एक लड़का अपने रूठे दोस्त को मनाने के लिए वहीं मेले में बीच सड़क पर बैठ गया। उसकी रूठी दोस्त लड़की भी कुछ ज्यादा ही नाराज थी, मनाने से नहीं मान रही थी। देखकर अच्छा लगा और ख्याल आया कि कहीं न कहीं मानना-मनाना मॉर्डन युग में भी काम कर रहा है। वरना आज रूठे हुए को पूछता कौन है। शायद इसलिए ही लोगों ने ज्यादातर रूठना बंद कर दिया है।

मैं हो चुका अब खाली हूं

• जुनैद कादरी

मैं नोट पुराना जाली हूं
मैं होली, ईद, दीवाली भी
मैं बोध गया वैशाली हूं
मैं हो चुका अब खाली हूं

सारी नदियां गंगा है बनी
लज्जा से ढकी अंगा है बनी
मैं रात अंधेरी काली भी
मैं सूर्य किरण की लाली हूं
मैं हो चुका अब खाली हूं

ज्वालाओं के पार चला था
बीच में फिर तूफान खड़ा था
लगी न जाने हाय वो किसकी
उस पल मैं सब हार पड़ा था
गहन पीड़ा से सींचा जब
तब बना प्रेम की प्याली हूं
मैं हो चुका अब खाली हूं

रमजान के रोजे भी मैं तो
छठ पूजा की भी थाली हूं
गंगा जमुनी तहजीब की मैं
करता पल पल रखवाली हूं
गंगा के जल की पवित्रता
जम जम की मीठी प्याली हूं
लाज शर्म का मोह त्याग के
मैं हो चुका अब खाली हूं

मैं बाबरी का गुंबद भी
मैं मंदिर की आधारशिला
मैं कारगिल का वो युद्ध भी हूं
मैं शाहजहां का लला किला
चौरासी के दंगों में जो
जले वो मेरे अपने थे
जलियांवाला बाग की मिट्टी
करती है हमसे ये गिला
मैं काल भैरव सा वेष बनाकर
बना चण्डी व काली हूं
सही गलत की फिक्र छोड़
मैं हो चुका अब खाली हूं

मैं फिर इतिहास सुनाता हूं
मुगलों तक ले कर जाता हूं
मंगोल, मराठा, शाह जफर
इन सब से तुम्हें मिलाता हूं
एक टीपू था निर्भय, अडिग
महाराणा था वो एक पथिक
चाणक्य की नीति सदा अमर
था शेर बहादुर शाह जफर
उन सब ने जो कर के है दिया
इस दौर में सब मिट जाएगा
इस दौर के हुक्मरां जो हैं
इतिहास फाड़ खा जाएगा
मैं खुसरो की कव्वाली भी
मैं प्रेमचंद की आली हूं
जहां बुद्ध ने पांव रखे
मैं वो सुंदर वैशाली हूं
लाज शर्म का मोह त्याग कर
मैं हो चुका अब खाली हूं।

रामलाल आनंद महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
बेनितो जुआरेज मार्ग, नई दिल्ली-110067